Diamond Diary

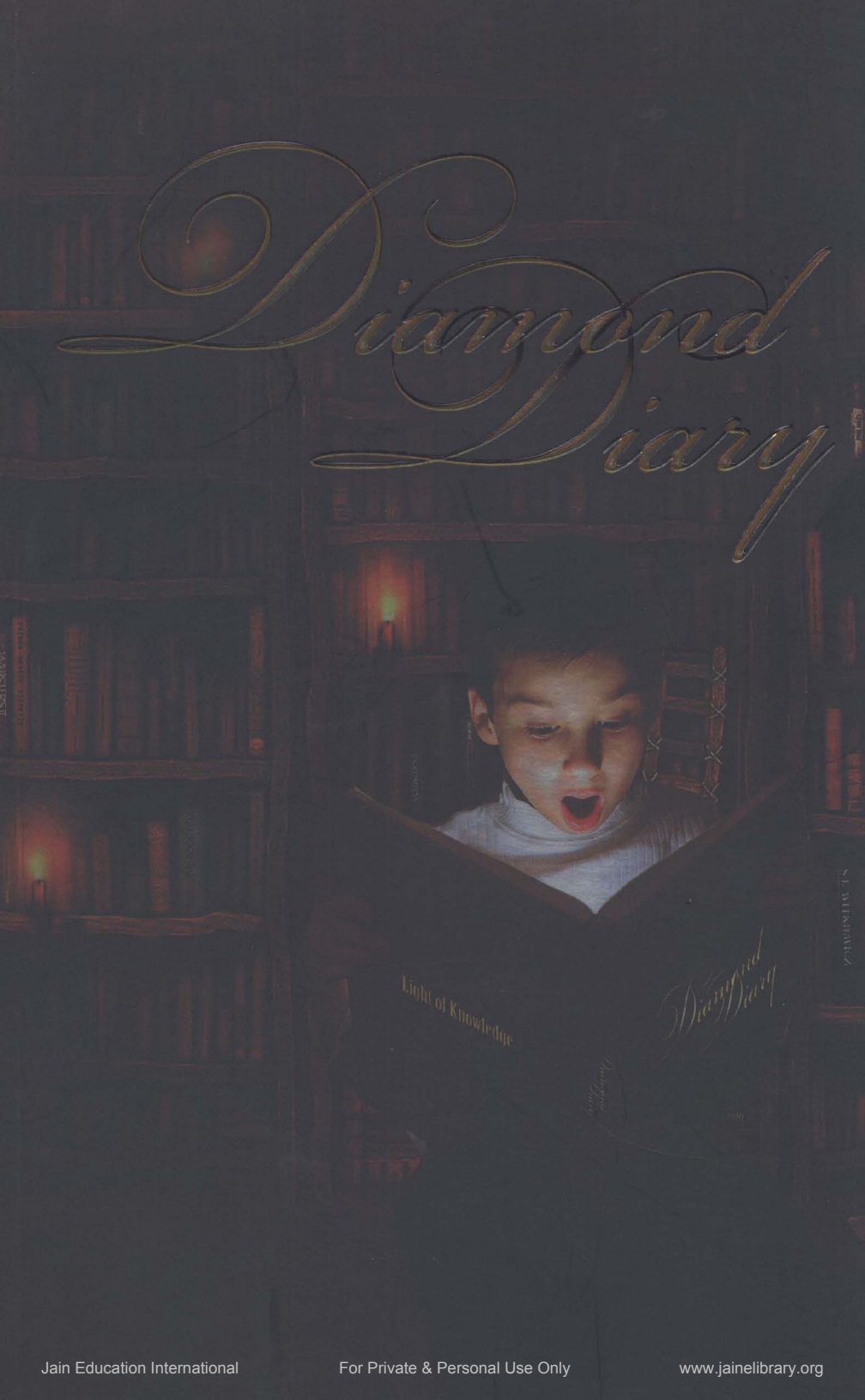

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Knowledge is Love, Light & Vision

प्रेम है...
प्रकाश है...
दृष्टि है...ज्ञान

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Diamond Diary

Blessings

Acharya Hemchandra Suriji

Editor

Acharya Kalyanbodhi Suriji

Publisher

K. P. Sanghvi Group

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्राप्तिस्थान

के. पी. संघवी एन्ड सन्स

1301, प्रसाद चेम्बर्स, ऑपेरा हाउस, मुंबई-400 004. फोन : 022-23630315

श्री चंद्रकुमारभाई जरीवाला

दु.नं.6, बद्रिकेश्वर सोसायटी, नेताजी सुभाष मार्ग, मरीन ड्राईव इ रोड,
मुंबई-400 002. फोन : 022-22818390/22624477

श्री अक्षयभाई शाह

506, पद्म एपार्ट., जैन मंदिर के सामने, सर्वोदयनगर, मुलुंड (प.), मुंबई-400 080. फोन : 25674780

श्री चंद्रकांतभाई संघवी

6/बी, अशोका कोम्प्लेक्स, जनता अस्पताल के पास, पाटण-384265 (उ.गु.). मो. : 9909468572

श्री बाबुभाई बेडावाला

सिद्धाचल बंग्लोज, सेन्ट एन. हाईस्कूल के पास, हीरा जैन सोसायटी, साबरमती,
अहमदाबाद-5. मो. : 9426585904

मल्टी ग्राफीक्स

18, खोताची वाडी, वर्धमान बिल्डींग, 3रा माला, प्रार्थना समाज, वी. पी. रोड, मुंबई-400 004.
फोन : 23873222/23884222 E-mail : support@multygraphics.com | www.multygraphics.com

सेवंतीलाल वी. जैन (अजयभाई)

52/डी, सर्वोदय नगर, 1ली पांजरापोल गली नाका, मुंबई. फोन : 22404717/22412445

महावीर उपकरण भंडार

सुभाष चौक, गोपीपुरा, सुरत. फोन : (0261) 2590265

महावीर उपकरण भंडार

शंखेश्वर. फोन : 273306. मो. : 9427039631

सृजन

155/वकील कॉलनी, भीलवाडा (राज.). मो. : 09829047251

प्रथम आवृत्ति : 2011 • मूल्य : 200/-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

॥ हीरा पायो
गाठ गठियायो ॥

जहा हर पन्ने पर हीरे है,
उस का नाम डायमंड डायरी
पढो और पाओ।
हर हीरा देगा एक नया प्रकाश...
एक नयी समृध्दि... और
एक नया आनंद।

All the Best

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जिन मन्दिर-जल मन्दिर-जीव मन्दिर का पुण्य प्रयाग अर्थात्

पावापुरी तीर्थ-जीवमैत्रीधाम

K. P. SANGHVI GROUP

K. P. Sanghvi & Sons
Sumatinath Enterprises
K. P. Sanghvi International Limited
KP Jewels Private Limited
Seratreak Investment Private Limited
K. P. Sanghvi Capital Services Private Limited
K. P. Sanghvi Infrastructure Private Limited
KP Fabrics
Fine Fabrics
King Empex

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक मंदिर में अनेक मंदिरों का मेल
अर्थात् पावापुरी तीर्थधाम...
एक स्वर्ग में अनेक स्वर्गों का मेल
अर्थात् पावापुरी तीर्थधाम...
एक संकुल में अनेक साधना संकुलों का मेल
अर्थात् पावापुरी तीर्थधाम...

देवलोक के टुकड़े जैसा भव्यातिभव्य जिन मंदिर (प्रभु भक्तों का स्वर्ग)

कला और कारीगिरी का कमाल कसब, शुद्धि और स्वच्छता का संगीन समागम, दिव्यता और भव्यता की एक मिसाल, शंखेश्वर पार्श्वनाथ प्रभु की कामणगारी प्रतिमा और अजब सी प्रभावकता ! जिसके पवित्र और प्रभावक अणु-परमाणुओं के स्पर्श मात्र से रोम-रोम रोमांचित होता है ! आँखें ठहरसी जाती है ! दिल डोल उठता है, हृदय में हलचल मच जाती है और अशांत मन शांत-प्रशांत बनता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चतुर्मुख जल मंदिर (उपासकों का स्वर्ग)

यहाँ कदम रखते ही प्रभुवीर की अंतिम अवस्था की अनुभूति के एक अनुपम एहसास का अनुभव होता है। चार मुख से देशना देनेवाले देवाधिदेव की स्मृति जागृत होती है।

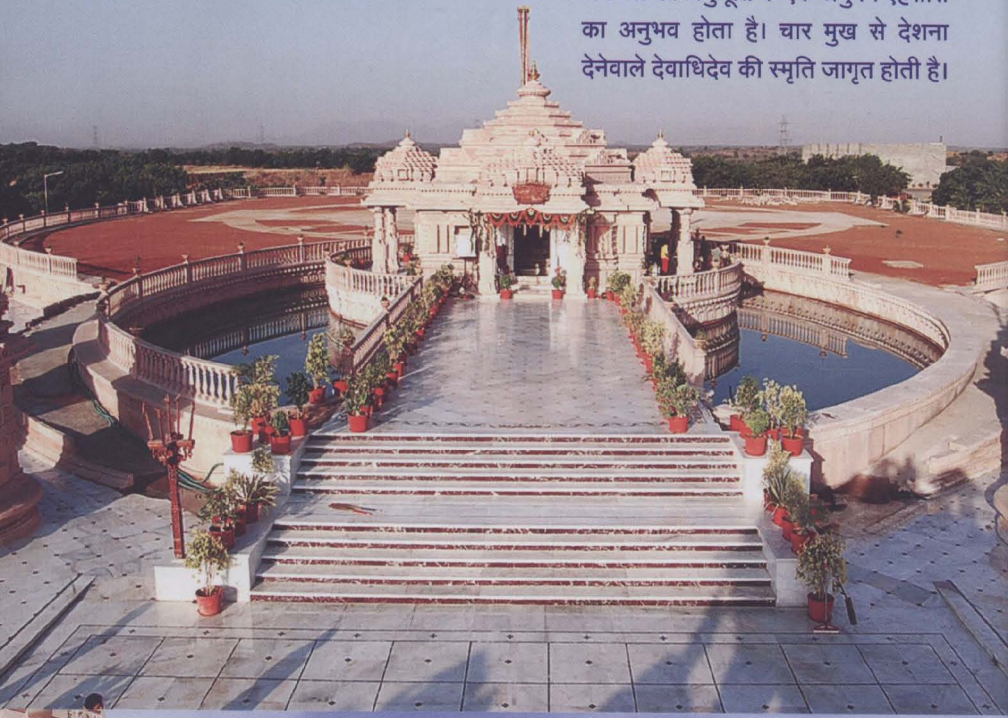

लेता गौतम नाम सीझे हर काम, दुःखे लहे विसराम पाये अविचल धाम !

गुरु गौतम-गणधर मंदिर (लब्धि साधकों का स्वर्ग)

दुःख-दारिद्र दूर करनेवाले अनंत लब्धि निधान का यह अलौकिक अवतरण है। गुरु गौतम मंदिर के साथ नव सुंदर गुरु मंदिर। कला-कारिगीरी के साथ विनय-भक्ति-समर्पणभाव का सुलभ समागम।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जीव मैत्री मंदिर (दयालुओं का स्वर्ग)... पांच हजार से अधिक अबोल पशु निर्भयता से किल्लोल कर रहे हैं, उनकी नियत-नित्य चर्या देखकर लगता है कि, ''यह प्राणी तो अपने से अधिक धार्मिक हैं!'' उनकी मस्ती देखकर लगता है कि, ''यह अपने से अधिक सुखी हैं ! घूमते-फिरते-खाते, मानव को दुर्लभ ऐसी VIP ट्रीटमेंट की मौज माननेवाले जानवरों को देखकर विचार आता है कि, पशु होकर भी कितने पुण्यशाली! कितने निश्चिंत ! कितने तन्दुरुस्त ! दया और करुणा का भाव प्रगट करनेवाला यह पशुदर्शन जीवनदर्शन की एक नई राह दिखाता है।

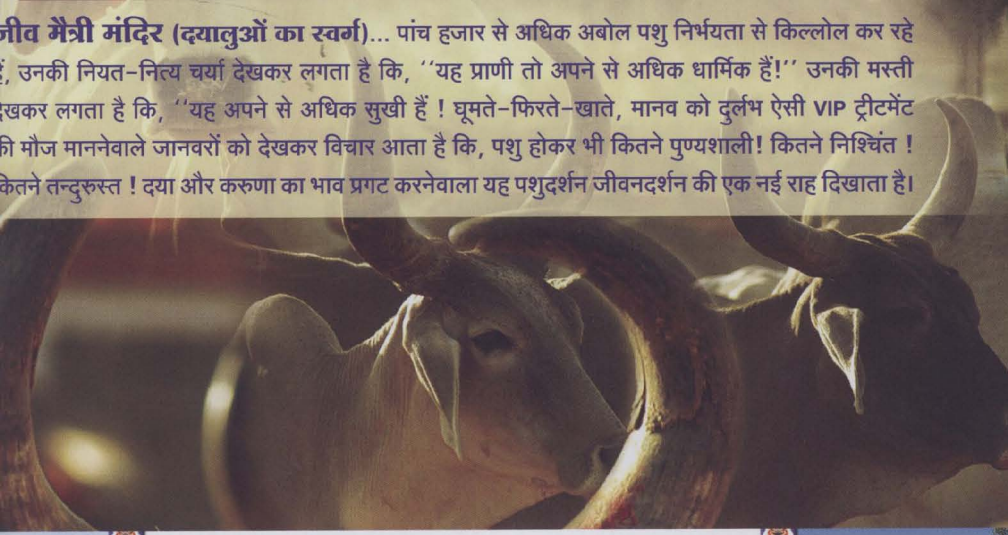

आतिथ्य मंदिर (अतिथिओं का स्वर्ग)

आधुनिक और अनुकूल अतिथिभवन, यात्रिक भवन, शांति विश्राम गृह, कनीमा विश्राम गृह, श्रीमती आशा रमेश गोयंका विशिष्ट अतिथि गृह, शुद्ध और संतुष्टिजनक भोजन, स्वच्छता से शोभायमान संकुल, भावोल्लास उछालता कर्णप्रिय भक्ति गीत गुंजन, बाल वाटिकाएँ, दर्शनीय प्रदर्शन वगैरे सर्जन, वर्षों से लाखों अतिथिओं का आकर्षण बिन्दु है।

साधना मंदिर (आत्मसाधकों का स्वर्ग)

आत्मशुद्धि की अनुभूति करानेवाले अध्यात्मसंकुल, शांत-शुद्ध आलंबन से मन की स्थिरता का सर्जन कराते ध्यानसंकुल, चातुर्मास, उपधान, शिबिर, ओली, अट्ठम इत्यादि धर्मानुष्ठानों के द्वारा साधक की शुद्धि और पुण्य वृद्धि करते साधनासंकुल इस तीर्थभूमि की पावनता में प्राण डालते हैं।

शासन मंदिर (शासनप्रेमीयों का स्वर्ग)

जिनमंदिरों, जीर्णोद्धारों, पूजनीय गुरुभगवंतों की अनेक प्रकार की वैयावच्च भक्ति-मूर्ति भंडार, चौदह स्वप्न भंडार, ज्ञान भंडार, उपकरण भंडार इत्यादि इस तीर्थधाम की शासन-शोभा है।

मानव मंदिर (करुणाप्रेमीयों का स्वर्ग)

देढ़ सो गाँवों में हर दिन कुत्तों को रोटी, कबूतरों को चना, गाय को चारा, जैन बच्चों को मिड-डे मील, मोबाईल मेडीकल सेन्टर, अनेक पांजरापोल में योगदान, ३६ कोम को उचित सहाय्य, सिरोही में हॉस्पिटल आदि अनेक कार्यो द्वारा पावापुरी ने भारतभर में ''मानवता की महेक'' फैलाई है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

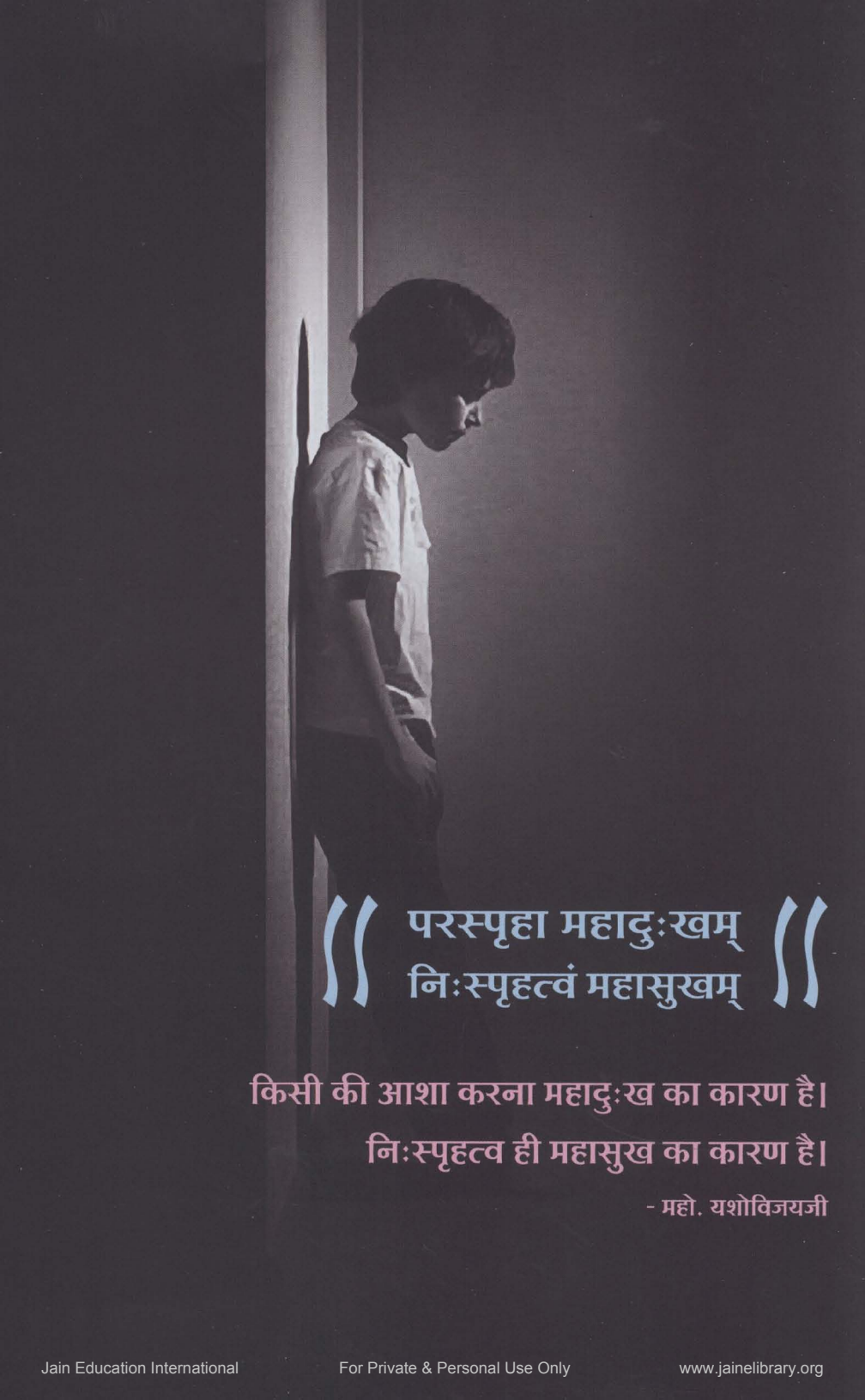

परस्पृहा महादुःखम्
निःस्पृहत्वं महासुखम्

किसी की आशा करना महादुःख का कारण है।
निःस्पृहत्व ही महासुख का कारण है।

- महो. यशोविजयजी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मैं कौन ??..

मैं अनन्त शक्तिमय आत्मा हूं।
मैं अनन्त ज्ञानमय आत्मा हूं।
मैं अनन्त सुखमय आत्मा हूं।

।। यो जिनः सोऽहमेव च ।।

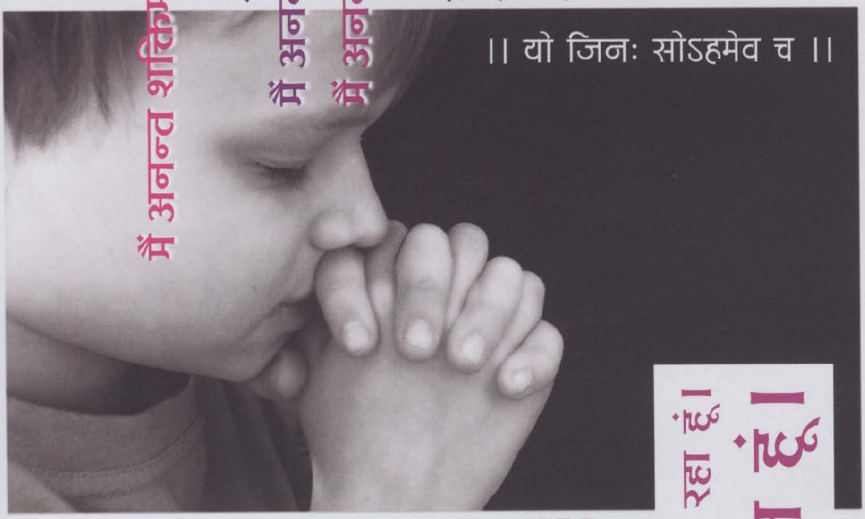

SIMPLE PRAYER

मैं अभी चारों गतियों में घूम रहा हूं।
मैं अभी पराधीन हूं।

मैं अभी
अनन्त दोषों से भरा हुआ हूं।
आठों कर्मों से बंधा हुआ हूं।
अनन्त पापों से भरा हुआ हूं।
मोह-माया के बन्धन में पड़ा हुआ हूं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शील से मोक्ष की प्राप्ति होती है।

शील से सुख शान्ति मिलती है।

शील मनुष्य का परम भूषण है।

शील से सब इच्छाएं पूर्ण होती हैं।

शील

अर्थात्

पवित्र आचार-विचार....

शील रहित मित्रों का संसर्ग न करें।

शील की सुगंध से अपने जीवन को महकाओं।

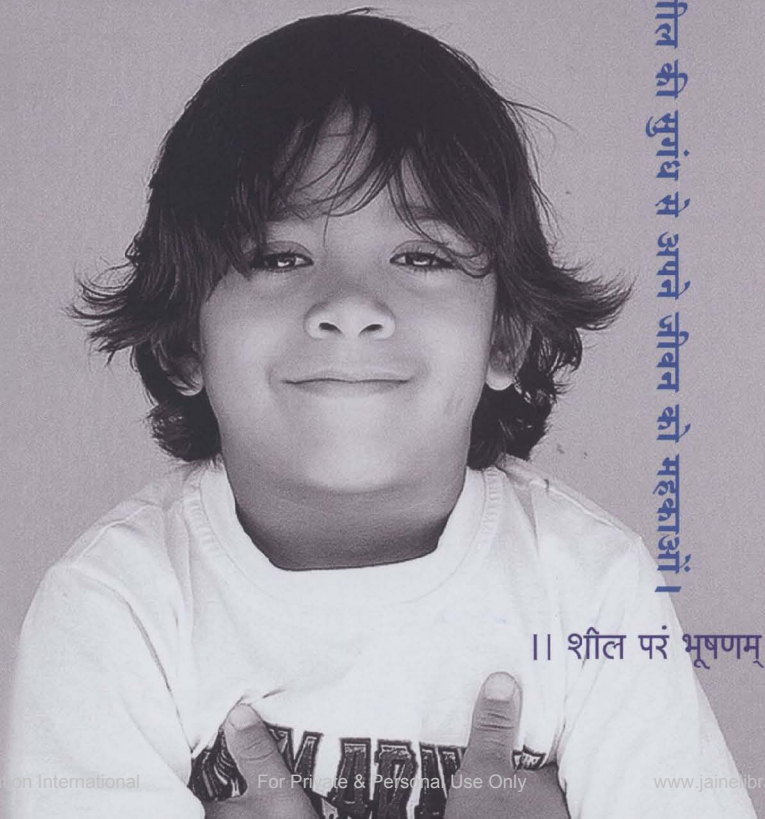

।। शील परं भूषणम् ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शाश्वतसुख के स्वामी

हे परमात्मा ! हे देवाधिदेव ! हे त्रिलोकनाथ ! हे विश्वकल्याणकर्ता विश्वोद्धारक विश्वेश्वर

हे प्रभु ! आपने तो अपने कर्म रुपी शत्रुओ को परास्त करके अपनी आत्मा को अनादि के चक्रव्यूह से मुक्त कर दिया। संसार रुपी किचड़ में कमल की तरह निर्लेप बन कर आपने अपनी साधना द्वारा आत्मसिद्धि को प्राप्त किया। अतः समस्त प्रकार की आधि; व्याधि; उपाधि; ताप; संताप; परिताप, रोक; शोक; दुःख; क्लेश; भय से पीड़ित **हम अज्ञानी जीवों को भी प्रभु सन्मार्ग प्रदान करो...**

आपकी पावन प्रतिष्ठा मात्र जिनालय मे नही हमारे मनमंदिर मे कर सके ऐसी योग्यता - सामर्थ्यता - संबलता प्रदान करें।

आपके पदार्पण से हमारे मन मंदिर में से कषायों रुपी चोर परास्त हो जायेगे आपके आगमन से हम भी सद्ज्ञान - सद्गुण - सद्भाव को धारकर शाश्वत पथ के पथिक बनकर **आपके श्री चरणो में पहुंचे** यही मंगलकामना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मनुष्य का जीवन बाहर अंधेरे से भरा हुआ है, लेकिन भीतर प्रकाश की कोई सीमा नहीं है। मनुष्य के जीवन की बाहर की परिधि पर मृत्यु है, लेकिन भीतर अमृत का सागर है। मनुष्य के जीवन के बाहर बंधन हैं, लेकिन भीतर मुक्ति है। और जो एक बार भीतर के आनंद को, आलोक को, अमृत को, मुक्ति को जान लेता है, उसके बाहर भी फिर बंधन, अंधकार नहीं रह जाते हैं। हम भीतर से अपरिचित हैं तभी तक जीवन एक अज्ञान है। परमात्म भक्ति-ध्यान भीतर से परिचित होने की प्रक्रिया है।

परमात्मा भक्तिध्यान

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुम चाहे उसे पकड़ो या न पकड़ो, उसका हाथ तुम्हारे हाथ में है ही...

सच्चा प्रेम तो स्वतंत्रता लाता है।

सच्चे प्रेम में तो ईर्ष्या की कोई झलक ही नहीं होती।

सच्चे प्रेम में तो ईर्ष्या की छाया भी नहीं होती। सच्चे प्रेम में तो श्रद्धा अनंत होती है।

मगर सच्चा प्रेम सच्चे प्रीतम से ही हो सकता है। इन छायाओं से नहीं बन सकेगा। यहां कैसे भरोसा करो किसी पर ! जिस पति पर तुमने भरोसा किया, जिस पत्नी पर तुमने भरोसा किया, उसकी सांस बंद हो जाए कल, जीवन खो जाए–क्या करोगे? और मन ऐसा चंचल है–आज तुमसे लगाव है, कल किसी ओर से हो जाए ! मन इतना चंचल है ! मन इतना क्षुद्र है ! मन व्यर्थ में इतना उत्सुक है : कल कोई और धनी मिल जाए; कोई और सुंदर देह का व्यक्ति मिल जाए; कल कोई और रूपवान मिल जाए–तो बात खत्म हो गई।

परमात्मा से और रूपवान तो पाया नहीं जा सकता; और परमात्मा से और धनी भी नहीं पाया जा सकता। परमात्मा से और ऊपर तो कोई है नहीं। इसलिए परमात्मा के साथ जो प्रेम बन जाता है, उसमें कोई प्रतिस्पर्धा, कोई ईर्ष्या नहीं जन्मती। और फिर परमात्मा के साथ यह भी भय नहीं है कि वह तुम्हें छोड़ दे। तुम्हें पकड़े ही हुए है। तुम चाहे उसे पकड़ो या न पकड़ो–उसका हाथ तुम्हारे हाथ में है ही। तुम जब सोचते हो तुम ने परमात्मा का ध्यान भी नहीं किया, विचार भी नहीं किया–तब भी वही तुम्हें सम्हाले हुए है। अन्यथा कौन तुम्हारे भीतर श्वास लेगा? कौन तुम्हारे खून को दौड़ाएगा रगों में? कौन तुम्हारे हृदय में धड़केगा? तुम चाहे उसे इनकार करो; परमात्मा ने तुम्हें इनकार कभी नहीं किया है। इसलिए जिस दिन तुम भी स्वीकार कर लोगे, वह तो स्वीकार किए ही है–जिस दिन ये दोनों स्वीकृतियां मिल जाएंगी, उसी दिन महामिलन हो जाता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक कदम परमात्मा की ओर

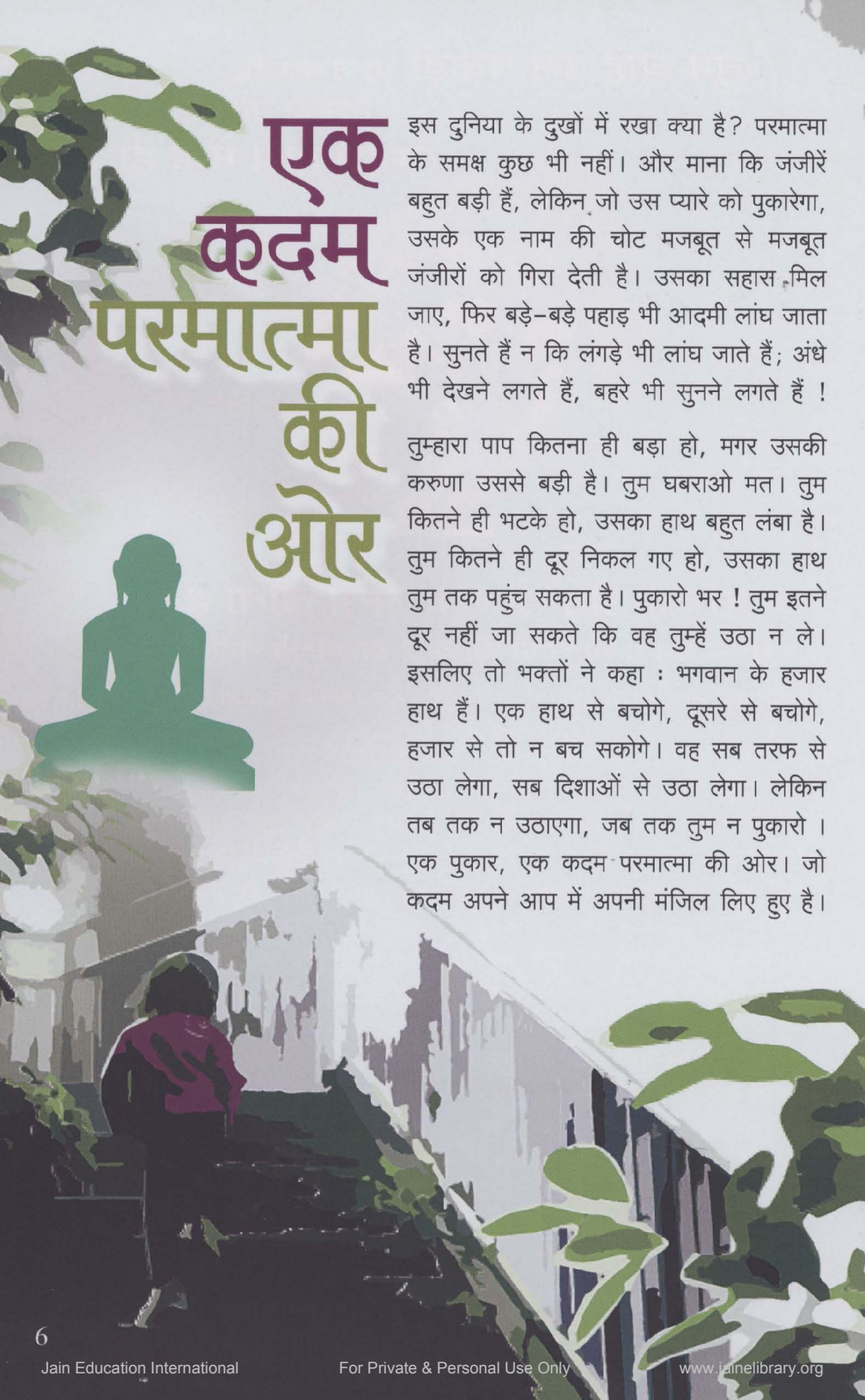

इस दुनिया के दुखों में रखा क्या है? परमात्मा के समक्ष कुछ भी नहीं। और माना कि जंजीरें बहुत बड़ी हैं, लेकिन जो उस प्यारे को पुकारेगा, उसके एक नाम की चोट मजबूत से मजबूत जंजीरों को गिरा देती है। उसका सहास मिल जाए, फिर बड़े-बड़े पहाड़ भी आदमी लांघ जाता है। सुनते हैं न कि लंगड़े भी लांघ जाते हैं; अंधे भी देखने लगते हैं, बहरे भी सुनने लगते हैं !

तुम्हारा पाप कितना ही बड़ा हो, मगर उसकी करुणा उससे बड़ी है। तुम घबराओ मत। तुम कितने ही भटके हो, उसका हाथ बहुत लंबा है। तुम कितने ही दूर निकल गए हो, उसका हाथ तुम तक पहुंच सकता है। पुकारो भर ! तुम इतने दूर नहीं जा सकते कि वह तुम्हें उठा न ले। इसलिए तो भक्तों ने कहा : भगवान के हजार हाथ हैं। एक हाथ से बचोगे, दूसरे से बचोगे, हजार से तो न बच सकोगे। वह सब तरफ से उठा लेगा, सब दिशाओं से उठा लेगा। लेकिन तब तक न उठाएगा, जब तक तुम न पुकारो । एक पुकार, एक कदम परमात्मा की ओर। जो कदम अपने आप में अपनी मंजिल लिए हुए है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जीवन को थोड़े रंग दो...

जीवन को वैसा ही मत छोड़ो जैसा तुमने पाया था। जीवन को कुछ सुंदर करो। उठाओ तूलिका, जीवन को थोड़े रंग दो। उठाओ वीणा, जीवन को थोड़े स्वर दो। पैरों में बांधों घूंघर, जीवन को थोड़ा नृत्य दो। प्रेम दो, प्रीति दो ! तोड़ो उदासी। जीवन को थोड़ा उत्सव से भरो।

तुम जितने सृजनात्मक हो जाओगे उतना ही तुम पाओगे, तुम परमात्मा के करीब आने लगे, क्योंकि परमात्मा अर्थात् सृजनात्मकता। **उसके करीब आने का एक ही उपाय है : सृजन।**

कवि, चित्रकार, मूर्तिकार कहीं ज्यादा करीब होता है, परमात्मा के। चित्रकार जब चित्र बनाने में बिलकुल लवलीन हो जाता है, तल्लीन हो जाता है, भूल ही जाता है अपने को - तब यह प्रार्थना का क्षण है।

तुम सृजन की किसी प्रक्रिया में अपने को पूरा गला दो, पिघला दो, मिटा दो। जैसे कि, कोई कवि, चित्रकार, या मूर्तिकार...

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

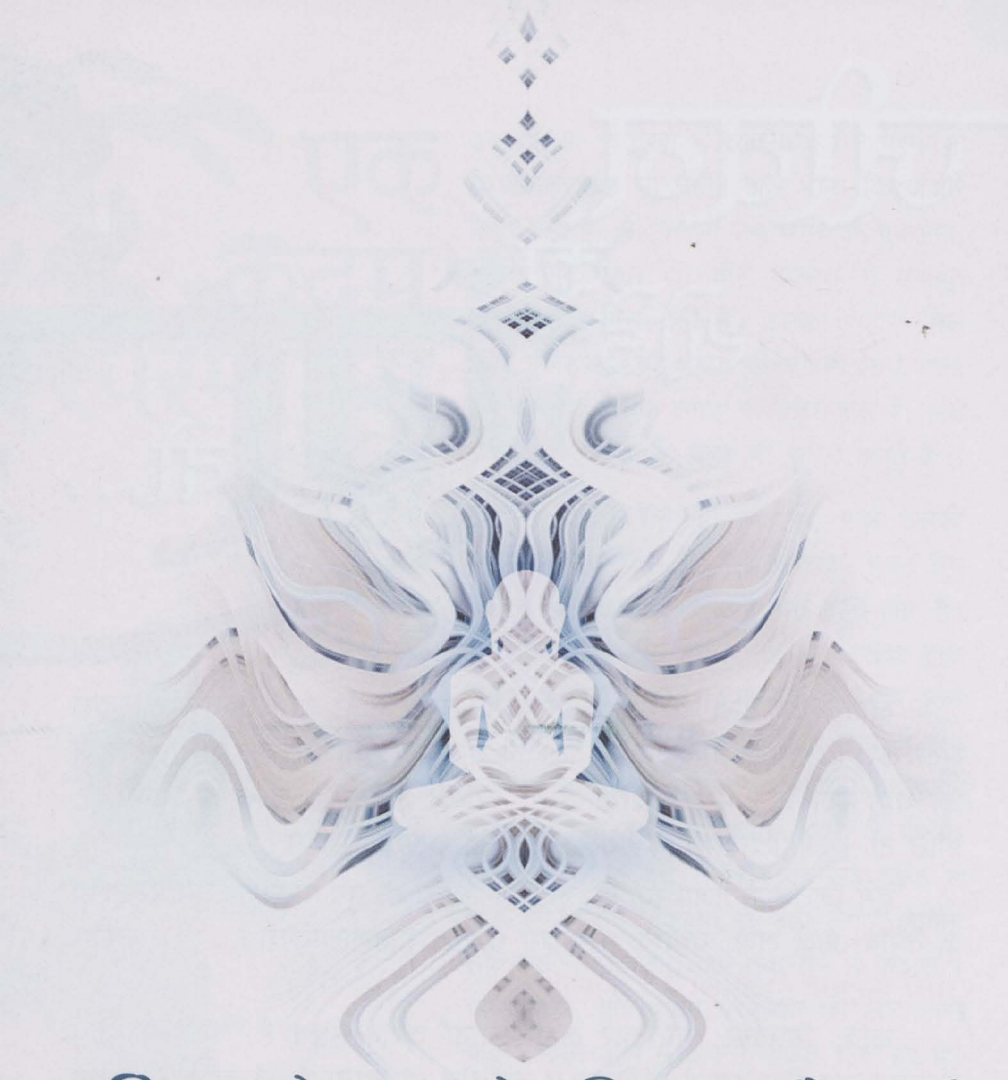

जीवन को जानने की कला है धर्म

धर्म विज्ञान है जीवन के मूल स्रोत को जानने का। धर्म मेथडोलॉजी है, विधि है, विज्ञान है, कला है, उसे जानने का जो सच में जीवन है। वह जीवन जिसकी कोई मृत्यु नहीं होती। वह जीवन जहां कोई दुःख नहीं है। वह जीवन जहां न कोई जन्म है, न कोई अंत। वह जीवन जो सदा है और सदा था और सदा रहेगा। उस जीवन की खोज धर्म है। उसी जीवन का नाम परमात्मा है। परमात्मा समग्र जीवन का इकट्ठा नाम है। ऐसे जीवन को जानने की कला है धर्म।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आदमी सुख की तलाश करता है, लेकिन सुख शाश्वत में ही हो सकता है। इस सूत्र पर ध्यान करना। सुख शाश्वत का लक्षण है। क्षणभंगुर में सुख नहीं हो सकता। यह जो पानी के बबूले जैसा जीवन है, इसमें तुम कितने ही भ्रम पैदा करो और कितने ही सपने देखो, सुख नहीं हो सकता।

संसार कब किसको मिला है? संसार मिलता ही नहीं और मजा यह है कि संसार बड़ा पास मालूम होता है। और परमात्मा पास मालूम नहीं होता और मिल सकता है, क्योंकि पास है–इतना पास है, पास से भी पास है ! तुम्हारे अंतरतम में बैठा है; शायद इसीलिए दिखाई भी नहीं पड़ता।

मछली को सागर कैसे दिखाई पड़े? उसी में पैदा होती है, उसी में लीन हो जाती है। **आदमी को परमात्मा कैसे दिखाई पड़े?** उसी में हम पैदा होते हैं, उसी में जीते, उसी में श्वास लेते, उसी में एक दिन लीन हो जाते हैं ! हम उसकी ही तरंग हैं। हम उसके ही फूल से उड़ी सुवास हैं। हम उसके ही दीये की किरण हैं। भेद चाहिए दृश्य और द्रष्टा में, तभी देखना हो पाता है। कोई चीज तुम्हारी आंख के बहुत करीब ले आई जाए, तो फिर तुम न देख सकोगे। देखना आंख की क्षमता है – इतनी करीब है कि उसको अलग कैसे रखोगे ?

ऐसा ही परमात्मा है...

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सब कुछ तुम्हारी पात्रता पर निर्भर है।

अगर तुम्हारा पात्र भीतर से बिलकुल शुद्ध है, निर्मल है, निर्दोष है, तो जहर भी तुम्हारे पात्र में जाकर निर्मल और निर्दोष हो जाएगा। और अगर तुम्हारा पात्र गंदा है, कीड़े-मकोड़ों से भरा है और हजारों साल और हजारों जिंदगी की गंदगी इकट्ठी है-तो अमृत भी डालोगे तो जहर हो जाएगा। सब कुछ तुम्हारी पात्रता पर निर्भर है। अंततः निर्णायक यह बात नहीं है कि जहर है या अमृत, अंततः निर्णायक बात यही है कि तुम्हारे भीतर स्थिति कैसी है। तुम्हारे भीतर जो है, वही अंततः निर्णायक होता है.....

तुम जैसा जगत को स्वीकार कर लोगे, वैसा ही हो जाता है। यह जगत तुम्हारी स्वीकृति से निर्मित है। यह जगत तुम्हारी दृष्टि का फैलाव है। तुम जैसे हो, करीब-करीब यह जगत तुम्हारे लिए वैसा ही हो जाता है। तुम अगर प्रेमपूर्ण हो तो प्रेम की प्रतिध्वनि उठती है। और तुमने अगर परमात्मा को सर्वांग मन से स्वीकार कर लिया है, सर्वांगीण रूप से-तो फिर इस जगत में कोई हानि तुम्हारे लिए नहीं है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उसके अतिरिक्त कोई है ही नहीं।

फिर जहां तुम देखोगे-आंख खोलोगे तो वही;
आंख बंद करोगे तो वही।
फिर पक्षियों की चहचहाहट में और
आकाश से गुजरते हुए
बादलों की गड़गड़ाहट में और
वृक्षों से सरकती हुई हवाओं की ध्वनि में और
पानी के झर-झर में
सब तरफ उसी की आवाज है।
उसके अतिरिक्त कोई है ही नहीं।
यही आश्चर्य है कि
कैसे हम उसे देखने से वंचित हैं।
जो सब तरफ मौजूद है, वृक्षों की हरियाली में और
आकाश की नीलिमा में और
लोगों की आंखों में और
लोगों के आंसुओं में और
मुस्कुराहटों में सब तरफ जो मौजूद है।
मेरे बोलने में और
तुम्हारे सुनने में जो मौजूद है।
इधर तुम्हें घेरे हुए है।
तुम जहां रहो, सदा तुम्हें घेरे हुए है।
और आंख बंद करो तो भीतर भी वही है।

जां तो जां, जिस्म भी रौशन है तेरी लौ से मेरा

देखता हूं तो तेरा रूप नजर आता है
और सुनता हूं तो आवाज तेरी सुनता हूं
सोचता हूं तो फकत याद तेरी आती है
जिक्र करता हूं तो मैं जिक्र तेरा करता हूं
खामुखी मेरी तेरा नगमाए-ख्वाबीदा है
मेरी आवाज? जो तू कहता है, मैं कहता हूं
जां तो जां, जिस्म भी रौशन है तेरी लौ से मेरा
तेरे ही नूर से मै शमा सिफ्त जलता हूं भूख
लगती है तो लगती है तेरे प्यार की भूख
चरण अमृत से ही मै प्यास बुझा सकता हूं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

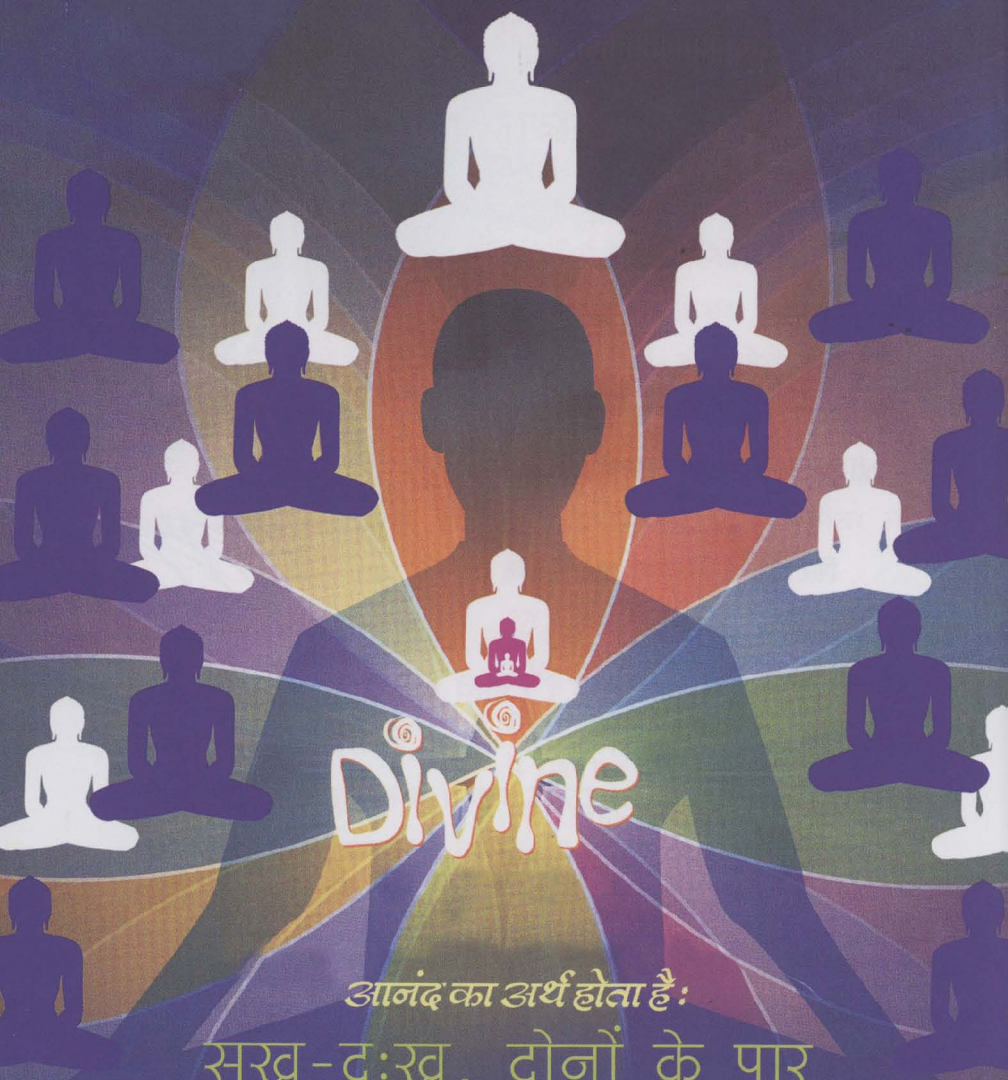

आनंद का अर्थ होता है :

सुख-दुःख, दोनों के पार

जहां तक सुख है वहां तक दुःख की छाया बनी ही रहेगी। और जहां तक दुःख है वहां तक सुख की आशा भी बनी रहेगी। इन दोनों के पार हो जाने की जो अवस्था है उसको हम आनंद कहते हैं। आनंद का अर्थ सुख नहीं होता। खूब समझ लेना। भाषाकोश में कुछ भी लिखा हो, भाषाकोश से कुछ लेना-देना नहीं है। जीवन के कोश में आनंद का अर्थ सुख नहीं होता। आनंद का अर्थ होता है : सुख-दुःख, दोनों के पार। परमात्मा को पाने का अर्थ होता है : आनंद को पा लिया; परम शांति को पा लिया। अब न दुःख बचा, न सुख बचा; न पाप बचा, न पुण्य बचा। गए सब द्वंद्व, गए सब द्वैत, गई दुई। अब एक बचा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मन को बनाएं ऐसा मंदिर कि जहां ध्यान का दीया जलता रहे

प्रत्येक व्यक्ति के
भीतर
तो परमात्मा छिपा है.....

एक नया सूरज, एक नई सुबह, एक नया मनुष्य, एक नई पृथ्वी–वह रोज निखरती आ रही है। अगर हम थोड़े सजग हो जाएं तो यह और जल्दी हो जाए, यह रात जल्दी कट जाए, यह प्रभात जल्दी हो जाए। ध्यान के दीयों को जलाओ और प्रेम के गीतों को गाओ। प्रेम के गीत और ध्यान के दिये, जो सुबह आज तक आदमी के जीवन में नहीं हुई, उसे पैदा कर सकते हैं। और आदमी बहुत तड़प लिया है, नरक में बहुत जी लिया है। समय है कि अब हम स्वर्ग को पृथ्वी पर उतार लें। स्वर्ग उतर सकता है।

मन को बनाएं ऐसा मंदिर कि जहां ध्यान का दीया जलता है, जहां जागरूकता का पहरेदार बैठा हो। ध्यान का दीया और जागरूकता का पहरा चित्त पर, तो यही सामान्य सा दिखाता जीवन अमृत जीवन में परिवर्तित हो जाता है।

प्रत्येक व्यक्ति के भीतर तो परमात्मा छिपा है, लेकिन हम जागेंगे तो ही उसे पा सकेंगे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आंखें जहां भी तुम देखो ऐसी हो जाएं शुद्ध कि वहीं

परमात्मा दिखाई पड़े।

इंद्रियां भी उसी के लिए द्वार बन सकती हैं।
और हम इंद्रिय प्रार्थना में संलग्न हो सकती है।
और उसी को हम कलाकार कहेंगे
जो सारी इंद्रियों को परमात्मा में संलग्न कर दे;
जो आत्मा से ही न पुकारे, देह से भी पुकारे।
परमात्मा की रोशनी प्राणों में ही न जगमगाए,

रोएं-रोएं में जगमगाए।

आत्मा तो उसमें डूबे ही डूबे,
यह देह भी उसी में डूब जाए।
तुम्हारे प्राण तो उसमें नहाएं ही नहाएं,

तुम्हारा तन भी उसमें नहा ले।

तुम्हारी श्वास-श्वास उसमें लिप्त हो जाए।
अभी रूप जहां दिखाई पड़ता है
वहां वासना पैदा होती है-यह सच है।
अब दो उपाय हैं; रूप देखो ही मत,
ताकि वासना पैदा न हो;
और दूसरा उपाय है कि रूप को
इतनी गहराई से देखो कि
हर रूप में उसी का रूप दिखाई पड़े,

तो प्रार्थना पैदा हो।

इंद्रियों को पूरी त्वरा देनी है,
तीव्रता देनी है, सघनता देनी है।
इंद्रियों को प्रांजल करना है,
स्वच्छ करना है, शुद्ध करना है।

इंद्रियों को कुंवारा करना है।

आंखें ऐसी हो जाएं शुद्ध कि
जहां भी तुम देखो वहीं परमात्मा दिखाई पड़े।

परमात्मा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हम उसी की तलाश कर रहे हैं

अन्वेषयामि हृदयाम्बुजकोशदेशे

मेरी उनकी प्रीत पुराणी, उन बिन पल न रहाऊं।

और जैसे-जैसे यह प्रेम का संबंध गहरा होता है, यह संवाद सफल होता है; जैसे-जैसे भक्त का हृदय परमात्मा के करीब धड़कने लगता है; जैसे-जैसे भगवान की मूरत स्पष्ट होती है-वैसे-वैसे पता लगता है कि जन्मों-जन्मों में इसी को तो खोजा है। यह प्रीत पुरानी है। यह कोई नई खोज नहीं है। और जब हम किसी और को भी प्रेमी समझ लिए थे, तब भी हम इसी को खोज रहे थे, यह पता चलता है। जब तुम किसी पुरुष के प्रेम में पड़ गए थे; किसी स्त्री के प्रेम में पड़ गए थे; किसी बेटे के प्रेम में पड़ गए; किसी मां-पिता के प्रेम में पड़ गए; किसी दोस्त के प्रेम में पड़ गए-जिस दिन तुम परमात्मा से संबंध जोड़ पाओगे, उस दिन चकित होकर देखोगे कि उन सब संबंधों में तुमने वस्तुतः परमात्मा को ही खोजा था। और इसलिए वे कोई भी संबंध तृप्त न कर पाए; क्योंकि तुम खोजते थे परमात्मा को और खोजते कहीं और थे-खोजते थे संसार में। मांग तुम्हारी बड़ी थी। तलाशते थे बूंद में और खोजते थे सागर को। अतृप्त न होते तो क्या होता ? असफल न होते तो क्या होता ? खोजते थे हीरों को, तलाशते थे कंकड़-पत्थरों में। विषाद हाथ न लगता तो क्या होता ? असफलता स्वाभाविक थी; निश्चित थी।

मेरी उनकी प्रीत पुराणी, उन बिन पल न रहाऊं।

हम उसी की तलाश कर रहे हैं। कभी गलत दिशा में, तो भी तलाश उसी की है। कभी ठीक दिशा में, तो भी तलाश उसी की है।

हम कुछ और खोजते ही नहीं, हम कुछ और खोज ही नहीं सकते। परमात्मा परम धन है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जीवन स्वस्थ होना चाहिए,
संगीतपूर्ण होना चाहिए,
सहज होना चाहिए,
समर्पित होना चाहिए।
साधना का अर्थ होना चाहिए :
अहंकार का विसर्जन,
न कि आत्म-दमन।
साधना का अर्थ होना चाहिए :
प्रभु के चरणों में समर्पण।
जहां बिठाए, बैठे;
जहां उठाए, उठे।
अपना कर्ता-भाव खो जाए।

बस यही परमपद है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सेयंबरो व आसंबरो वा बुद्धो अहव अन्नो वा।
समभावभाविअप्पा लहेइ मुक्खं न संदेहो।। – संबोधसित्तरीः २

श्वेतांबर हो या दिगंबर हो, बुद्ध हो या अन्य कोई मतवादी हो,

मगर...

जो समभाव से भावित आत्मा होगी, वह मोक्ष प्राप्त करेगी. उसमें कोई शंका नहीं.

– आचार्य रत्नशेखरसूरिजी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परमात्मा तुम्हारे भीतर है। **मैं** तुम्हारे भ्रांति है। परमात्मा की किताब को तुमने गलत ढंग से पढ़ा है; **मैं** की तरह पढ़ लिया है। और तुम भीतर जाते भी नहीं। वहां असली किताब है। वहां वेदों का वेद, कुरानों की कुरान है। वहां श्रीमद्भगवद्गीता है। वहां भगवान है, वहां तुम जाते ही नहीं; तुम बाहर दौड़ रहे हो–धन कमाओ, पद कमाओ, यह कमाओ, वह कमाओ! और यह सारी कमाई किसलिए, तुम्हें पता है? **मैं** को सिद्ध करने के लिए। बड़ा राज्य होगा तो बड़ा **मैं** सिद्ध हो जाएगा। धन का ढेर होगा तो बड़ा **मैं** सिद्ध हो जाएगा। राष्ट्रपति हो जाऊंगा, प्रधानमंत्री हो जाऊंगा–तो **मैं** सिद्ध हो जाएगा। यह मैं की दौड़। **मैं** को सिद्ध करने में लगे हो और **मैं** कभी सिद्ध होता नहीं, क्योंकि **मैं** है नहीं। जो है नहीं, वह सिद्ध हो नहीं सकता। तुम दो और दो को पांच बनाने में लगे हो; यह होता नहीं; यह असंभव है।

सिकंदर से पूछो।
हाथ खाली के खाली रहे। मैं शून्य की तरह जा रहा हूं।

क्या कह रहा है सिकंदर? सिकंदर यह कह रहा है :
अहंकार पाया नहीं; शून्य ही था और शून्य ही जा रहा हूं।
काश, इस शून्य को स्वीकार कर लिया होता,
राजी हो गया होता,
अहंकार की दौड़ में समय खराब न किया होता...
तो परमात्मा उतर आता !

जो तू है तो मैं नहीं हूं पैदा,
जो मै हूं तो तू नही है जाहिर
यहां तो बस बात एक की है,
यहां कोई दूसरा नहीं है
खुदा के बंदे खुदा को पाते है
अपनी हस्ती को खुद मिटा के
खुदी की तकमील करके देखें
जो कह रहे है खुद नहीं है...

।। 'अहं' भावोदयाभावो बोधस्य परमावधिः ।।

मैं कभी सिद्ध होता नहीं, क्योंकि 'मैं' है नहीं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मैं तेरी वजह से हूं तू ही है मेरे भीतर!

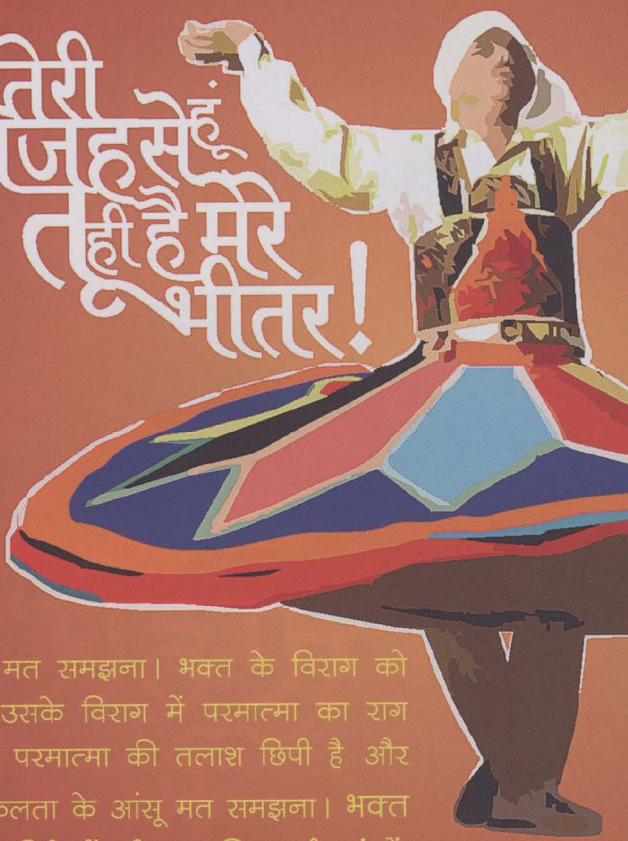

भक्त की उदासी को उदासी मत समझना। भक्त के विराग को केवल विराग मत समझना। उसके विराग में परमात्मा का राग छिपा है। भक्त की उदासी में परमात्मा की तलाश छिपी है और भक्त के आंसुओं को तुम विफलता के आंसू मत समझना। भक्त के आंसुओं में हजार वसंत छिपे हैं। वे उसकी प्रार्थनाएं हैं, उसकी आशाएं हैं, उसके मनसूबे हैं। भक्त का पतझड़ भी अपने भीतर हजारों वसंत छिपाए हुए है। उस परमात्मा को खोजते, वियोग में एक नहीं, बहुत जन्म बीत गए हैं। मिलन होकर रहेगा। अनंत-अनंत काल भी बीत जाएं विरह में, तो भी मिलन हो कर रहेगा। ऐसी आस्था, ऐसी श्रद्धा हमारी भक्ति है। परमात्मा ही तुम्हारे इश्क की मंजिल है और वह आकाश से आगे है। सब सीमाओं के पार-असीम से भी पार। सब शब्दों से पार-निःशब्द से भी पार। जहां पंखों की भी जरूरत नहीं रह जाती उड़ने के लिए। भक्त जानता है कि मैं तेरी वजह से हूं, तू ही है मेरे भीतर ! मेरे प्राण तू है। मेरी आत्मा तू है। मैं नहीं हूं-तू है। तैयारी करो-इस यात्रा के लिए। जो जन्मों में नहीं हुआ, वह क्षणों में भी हो सकता है। पुकार चाहिए। इस प्रेम की बेल को परमात्म भक्ति से सींचो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुम्हारे हाथ से डूब जाऊं तो भी उबर जाऊं

अब तुम ले चलो उस पार। अपने से तो यह न हो सकेगा। यह भवसागर बड़ा है। दूसरा किनारा दिखाई भी नहीं पड़ता है। हां, तुम्हारा प्रेम का हाथ आ जाए तो मैं कहीं भी जाने को तैयार हूं। दूसरा किनारा न हो तो जाने को तैयार हूं। तुम्हारा हाथ काफी है। तुम बीच मझधार में डुबा दो तो राजी हूं, क्योंकि तुम्हारे हाथ से डूब जाऊं तो भी उबर जाऊँ।

संसारतारकविभो ! जीवनाधिनाथ !

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जीवन क्षणभंगुर है।

।। असंखयं जीवियं मा पमायए ।।

इस जगत में सब क्षणभंगुर है; अगर प्यार खोजना हो तो शाश्वत में खोजो। यहां कुछ अपना नहीं है। यहां भरमो मत, अपने को भरमाओ मत, भरमाओ मत ! यहां सब छूट जानेवाला है। यहां मृत्यु ही मृत्यु फैली है। यह मरघट है। यहां बसने के इरादे मत करो। यहां कोई कभी बसा नहीं।

जीवन क्षणभंगुर है। जिसका मन यहां से विरक्त हो गया, वही परमात्मा में अनुरक्त हो सकता है।

जिन्हें तुमने अपना समझा है, साथ हो गया है दो क्षण का राह पर–सब अजनबी हैं। आज नहीं कल सब छूट जाएंगे। तुम अकेले आए हो और अकेले जाओगे। और तुम अकेले हो। इस जगत में सिर्फ एक ही संबंध बन सकता है–और वह संबंध परमात्मा से है; शेष सारे संबंध बनते हैं और मिट जाते हैं। सुख तो कुछ ज्यादा नहीं लाते, दुःख बहुत लाते हैं। सुख की तो केवल आशा रहती है; मिलता कभी नहीं है। अनुभव तो दुःख ही दुःख का होता है।

जगत से टूटते हुए संबंधों को जगत के प्रति वैराग्य बना लो, जगत से प्रेम मुक्त हो जाओ और परमात्मा के चरणों में चढ़ा जाओ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

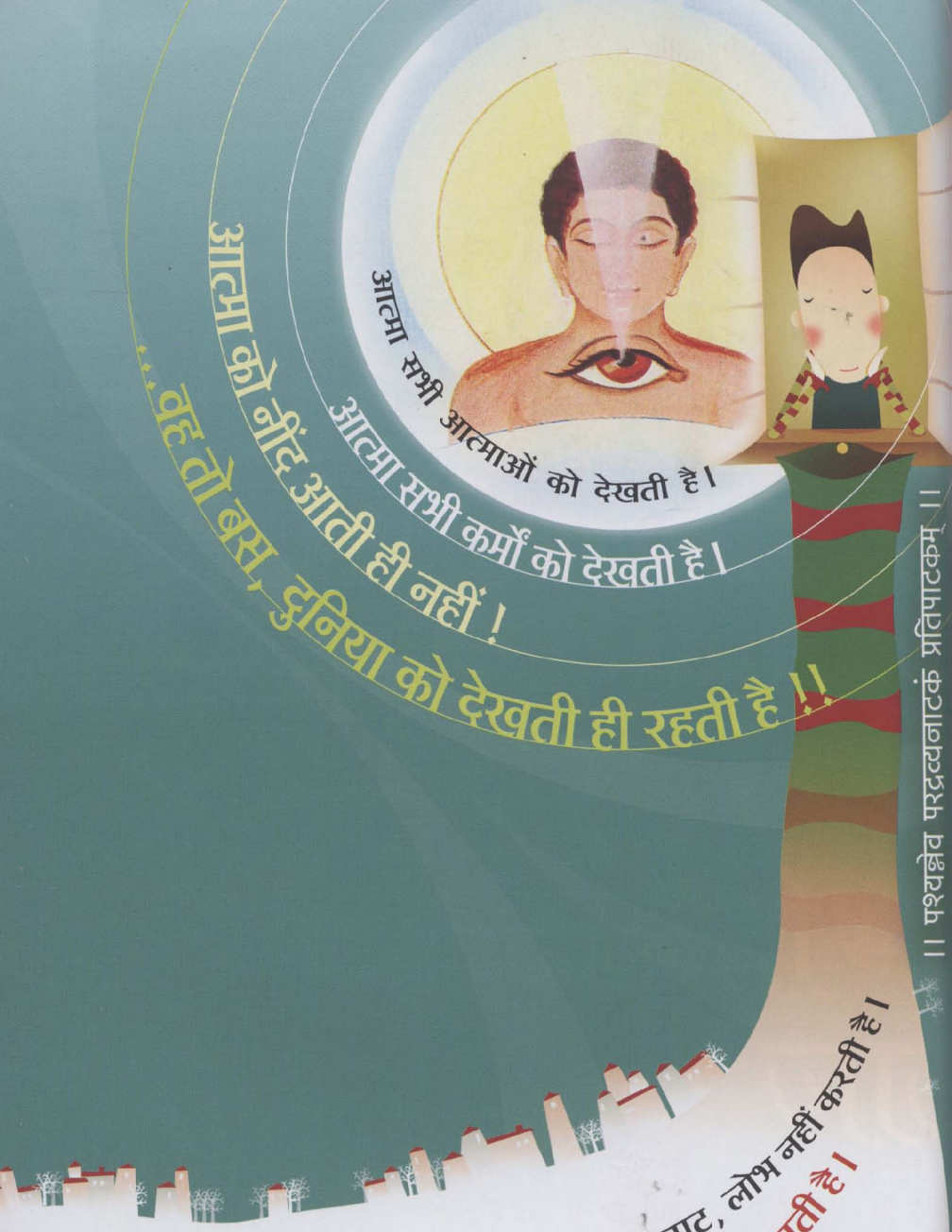

॥ पश्यन्नेव परद्रव्यनाटकं प्रतिपाटकम् ॥

आत्मा कभी भी गुस्सा, अभिमान, माया-कपट, लोभ नहीं करती है।

आत्मा न तो किसे से डरती है, न ही किसी को डराती है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शुद्ध आत्मा को, जो स्वयं शुद्ध आत्मा हो, वे ही देख सकते है।

...म अपनी इन आंखों से ऐसी शुद्ध और सिद्ध आत्मा को नहीं देख सकते !

अरूपी बनी हुई आत्मा को जन्म भी लेने का नहीं... और मरने का भी नहीं ! जन्म लेने का और मरने का उसका स्वभाव नहीं है।

आत्मा को जन्म लेने का दुःख नहीं ! आत्मा को मृत्यु पाने की पीड़ा नहीं ! जहां पर जन्म-मृत्यु नहीं होते हैं, उसे मोक्ष कहा जाता है !

.....

|| सच्चिदानन्दपूर्णेन पूर्णं जगदवेक्ष्यते ||

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

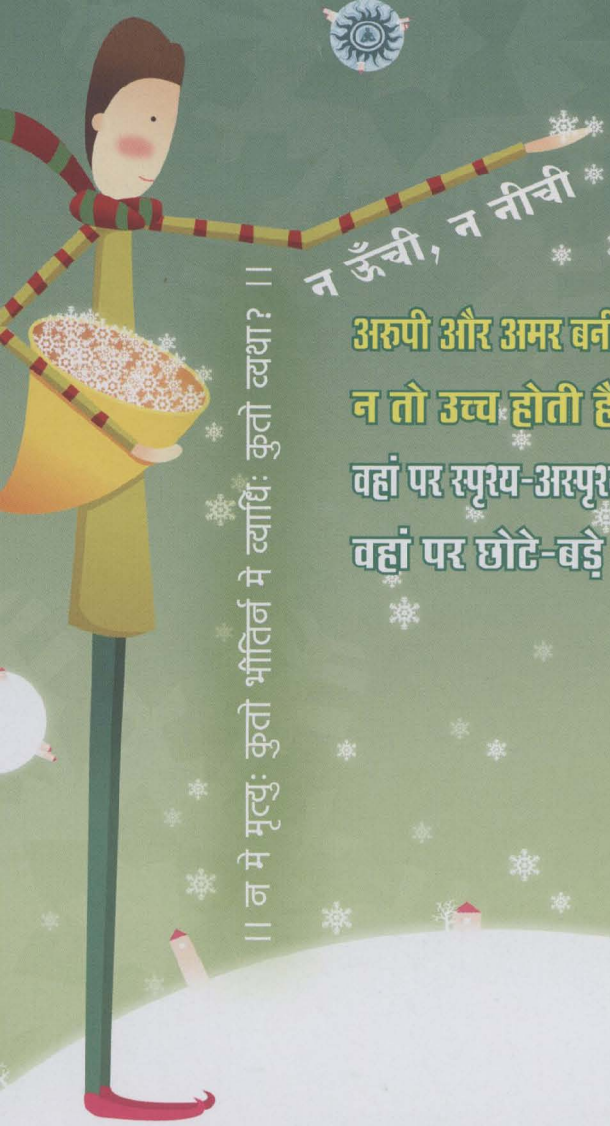

न ऊँची, न नीची

।। न मे मृत्युः कुतो भीतिर्न मे व्याधिः कुतो व्यथा ? ।।

अरुपी और अमर बनी हुई आत्मा
न तो उच्च होती है, न ही वह नीच होती है
वहां पर स्पृश्य-अस्पृश्य का भेद नहीं है।
वहां पर छोटे-बड़े का अंतर नहीं है।

अजर-अव्याबाध

शुद्ध आत्मा को रोग नहीं होता, व्याधि और पीड़ा नहीं होती,
शुद्ध आत्मा को अखंड़ जवानी होती है,
संपूर्ण आरोग्य और अनंत आनंद होता है !

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

।। से ण सद्दे ण रूवे ण गंधे ण रसे ण फासे अरुवी सत्ता अणित्थंत्थसंठाणा ।।

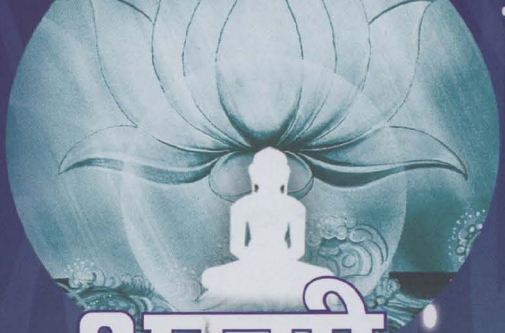

अरुपी

शरीर से जब आत्मा मुक्त हो जाती है,
तब फिर उसका रुप नहीं होता,
उसका भार या वजन नहीं होता।
उसमें रस या स्वाद नहीं रहता,
उसमें सुगंध या दुर्गंध नहीं रहती !
उसमें मुलायम या खुरदरा स्पर्श भी नहीं रहता !
उसका यश नहीं होता, उसका अपयश नहीं होता।
उसका सौभाग्य नहीं होता, उसका दुर्भाग्य नहीं होता।

वहां सभी आत्माएं समान - एक सी !
वहां नहीं है मान और अपमान ! न गर्व और अभिमान !

ऊँच-नीच के भेद बिना की धरती का नाम है...

'सिद्धशिला' !

उसे ही मोक्ष कहते है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आत्मा

वीतराग

बन जाती है यानी
वीतराग आत्मा को

अनंत सुख

होता है।
वीतराग आत्मा को

परम शांति

होती है।

अनंत शक्तिशाली
शुद्ध आत्मा में
आत्मा की

अनंत शक्ति

प्रगट होती है

लब्धि

प्रगट होती है।

।। जं लहइ वीयराओ सुक्खं तं मुणइ सुच्चिय न हु अन्नो ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

।। परमात्मतत्त्वं प्रणमामि नित्यम् ।।

जवानी, आरोग्य और आनंद आत्मा के होते हैं, शरीर के नहीं !

रोग-शोक और संताप से मुक्त आत्मा को हमारी वंदना हो !

ऐसी अनंत शक्तिशाली आत्माओं की पूजा करने से, उनका ध्यान करने से

हमको भी वैसी अनंत शक्ति जरुर प्राप्त हो सकती है !!!

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रभु!
मुझे आप जैसा बनना है !!!

मैं हिंसक हूँ..... मुझे अहिंसक बनाओ..!

मैं झूठ बोलता हूँ..... मुझे सत्यवादी बनाओ..!

मैं कृपण हूँ..... **मुझे उदार बनाओ..!**

मैं कामी हूँ..... मुझे संयमी बनाओ..!

मैं अहंकारी हूँ..... **मुझे नम्र बनाओ..!**

मैं मायावी हूँ..... मुझे सरल बनाओ..!

मैं रागी हूँ..... मुझे विरागी बनाओ..!

मैं द्वैषी हूँ..... **मुझे वीतरागी बनाओ..!**

मैं दोष देखनेवाला हूँ..... मुझे गुणग्राही बनाओ..!

मैं परनिन्दक हूँ..... मुझे स्वनिन्दक बनाओ..!

मैं प्रमादी हूँ..... मुझे अप्रमादी बनाओ..!

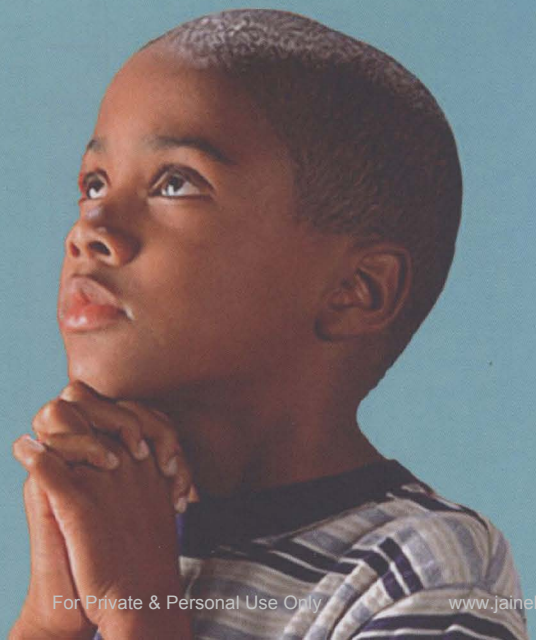

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यह मेरा नहीं है...

यह शरीर मेरा नहीं है।

यह घर मेरा नहीं है।

संसार की कोई भी जड़ चेतन वस्तु मेरी नहीं है।

क्या है तेरा ?

तूं क्या लेकर आया था ?

और क्या लेकर यहां से जायेगा ?

उसका गहरा विचार करने से संसार के पदार्थों में

मोह-आसक्ति कम हो जायगी।

जीव अकेला आया है और
मर कर अकेला ही जायेगा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वीतराग

की पूजा करने से

वीतराग

बना जाता है !

परमात्मा

की पूजा करने से

परमात्मा

बना जाता है !

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

।। पाणिवहं घोरं।।

अपने सौंदर्य के साधनों के लिये

मूक प्राणियों का उपयोग हो रहा हैं।

हमे इस जीव हिंसा के पाप से बचना होगा।

शेम्पू के बदले अहिंसक पदार्थ,

टूथपेस्ट की जगह आयुर्वेदिक दंतमंजन,

चमडे, हाथी दांत, कलर मोती, सिल्क

इत्यादि वस्तुओं का उपयोग बंध करना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

RESPECT THE VIEWS OF OTHERS

औरो के विचारों का सन्मान करो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

PATH OF SUCCESS PATH OF SUCCESS PATH OF SUCCESS

बच्चों पर निवेश करने की
सबसे अच्छी चीज है

अपना समय और
अच्छे संस्कार।

ध्यान रखें,

एक **श्रेष्ठ बालक** का निर्माण
सौ विद्यालय को
बनाने से भी बेहतर है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धीरज मत खोओ ।
हीनता और हताशा
तुम्हें शोभा नहीं देती ।
अपने आत्म-विश्वास को बढाओ
फिर से प्रयास करो,
तुम्हें सफलता
अवश्य मिलेगी ।

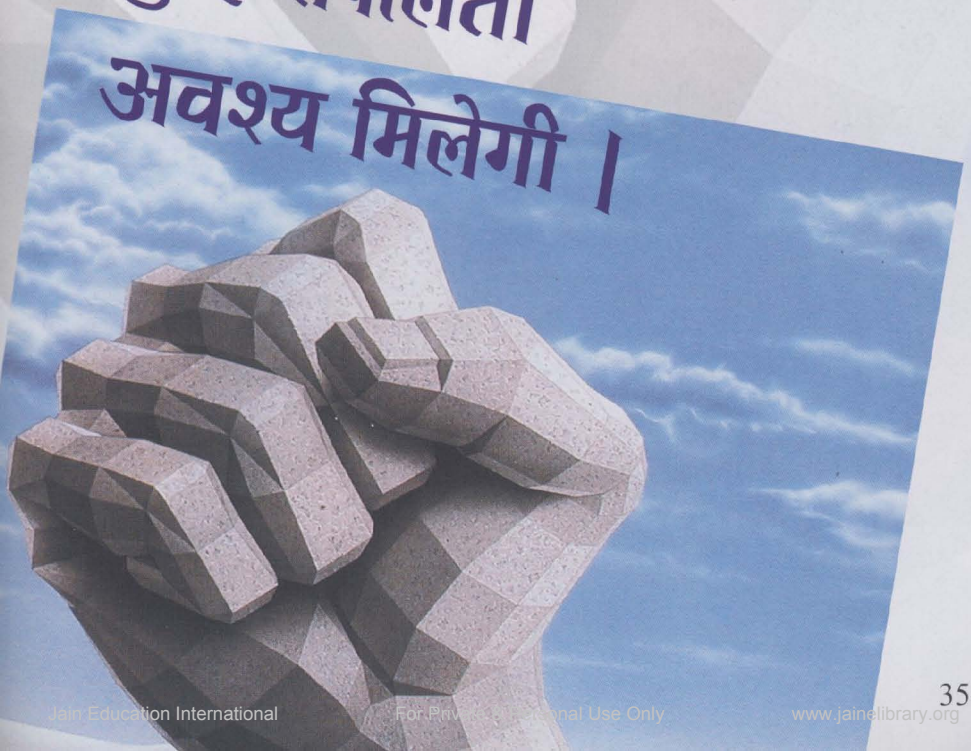

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दया धर्म हिरदे बसै बोलै अमृत बैन ।
तेई ऊँचे जानिये जिनके ऊंचे नैन ।।

– मलूकदास

दिल में दया, वचन में सुधा और दृष्टि में
उच्चता यही तो महानता का परिचय है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बाधाओं को देखकर विचलित न हों।
विश्वास रखें,
जीवन में निन्यानवें द्वार बंद हो जाते हैं,
तब भी कोई-न-कोई
एक द्वार जरूर खुला रहत

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धन और व्यवसाय में
इतने भी व्यस्त
मत बनिये कि,
स्वास्थ्य, परिवार
और अपने कर्तव्यों पर
ध्यान न दे पाएँ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हमें जो मिला है,
हमारी पात्रता से ज्यादा मिला है ।

यदि आपके पाँव में जूते नहीं हैं,
तो अफसोस मत कीजिये ।
दुनिया में कई लोगों के पास
तो पाँव ही नहीं हैं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

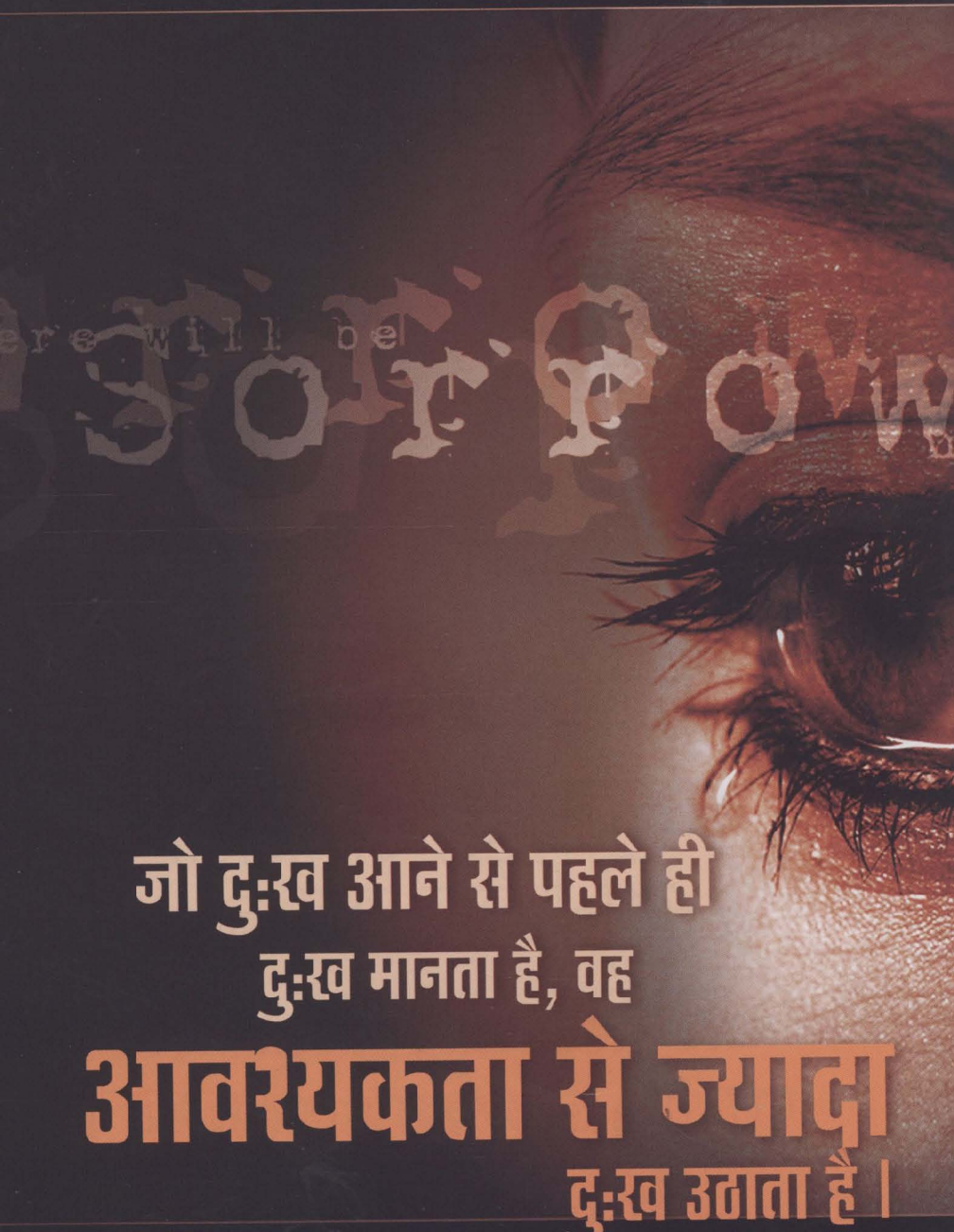

जो दुःख आने से पहले ही
दुःख मानता है, वह
आवश्यकता से ज्यादा
दुःख उठाता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

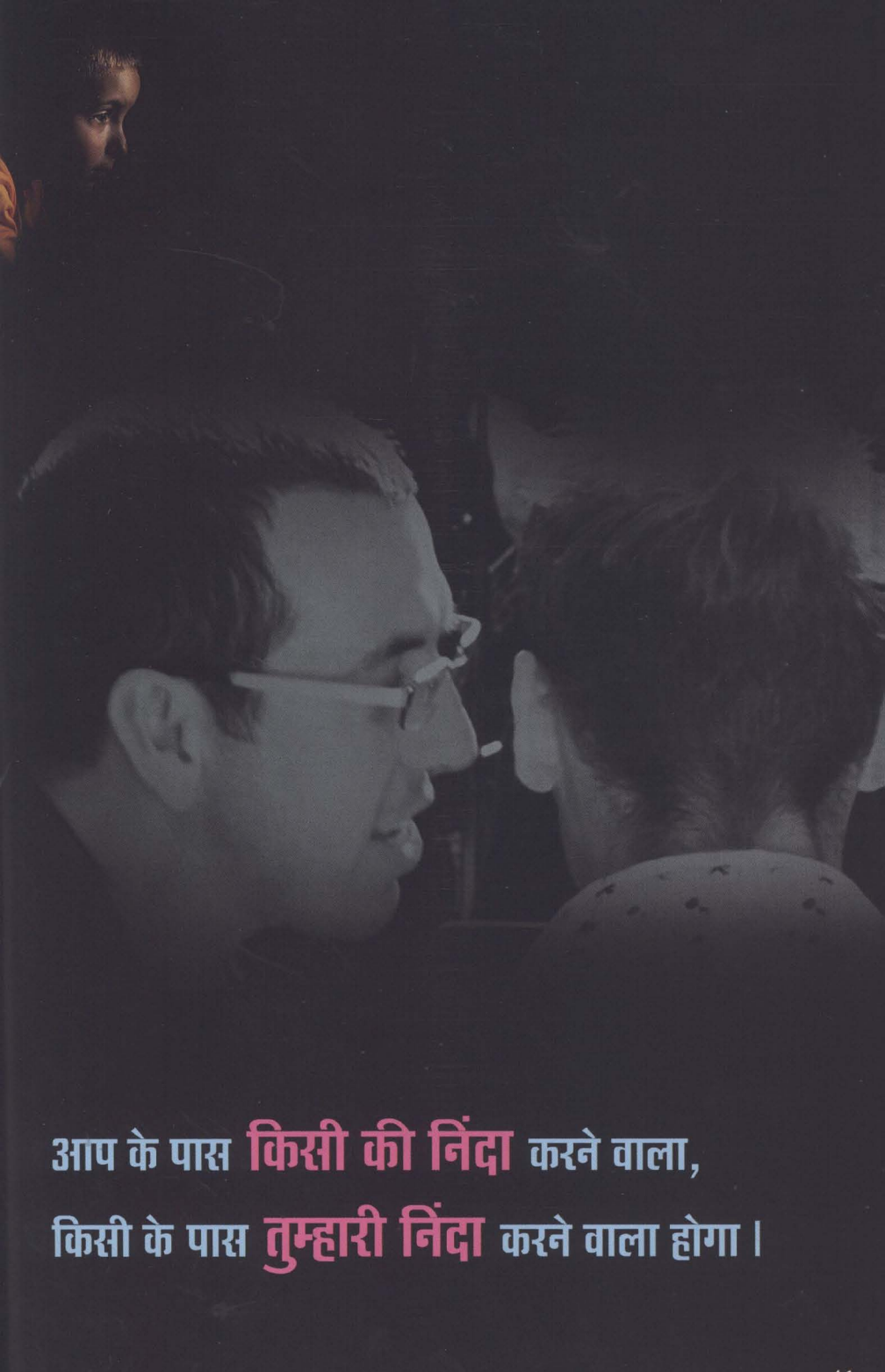

आप के पास किसी की निंदा करने वाला,
किसी के पास तुम्हारी निंदा करने वाला होगा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जीवन की सफलता का परम सूत्र है।
जीवन की सफलता का परम सूत्र है।
जीवन की सफलता का परम सूत्र है।
जीवन की सफलता का परम सूत्र है।

कष्ट सहन करने का अभ्यास जीवन की सफलता का परम सूत्र है।

कष्ट सहन करने का अभ्यास जीवन की सफ
कष्ट सहन करने का अभ्यास जीवन की सफ
कष्ट सहन करने का अभ्यास जीवन की सफ
कष्ट सहन करने का अभ्यास जीवन की सफ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

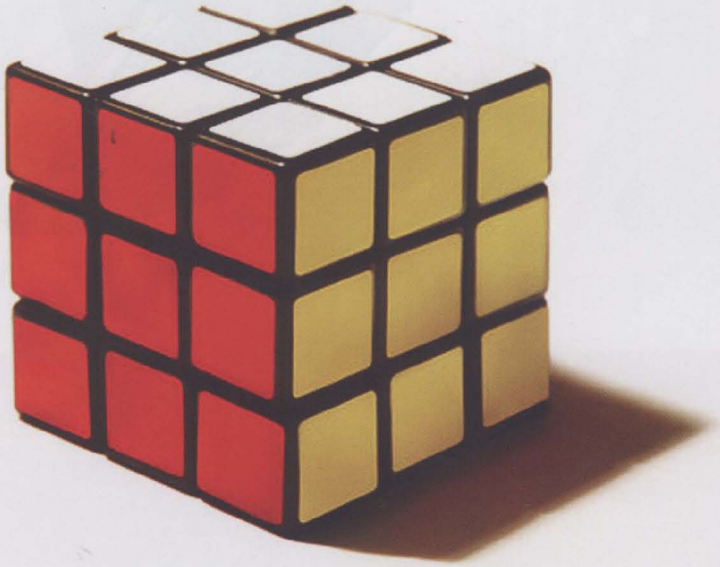

जिसके पास

उम्मीद है,

वह लाख बार हारकर भी

नहीं हारता...

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शर्म की अमीरी से
इज्जत की गरीबी
अच्छी है.....

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जीवन संध्या तरफ जाते हुए डरना मत,
मृत्यु तो दिन के बाद रात का आराम है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

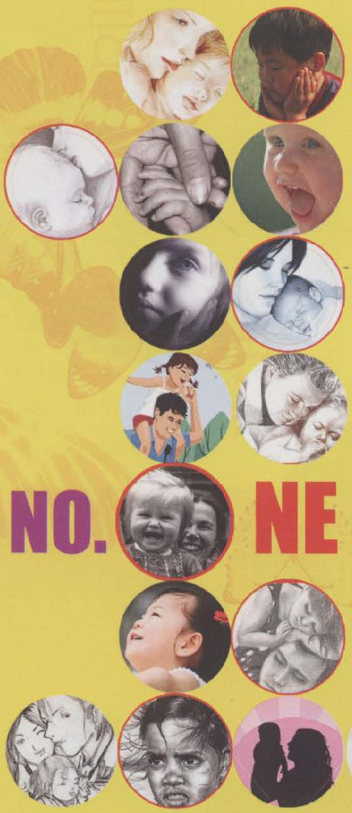

MY MOTHER IS NO. ONE

॥ जननी जन्मभूमिश्च
स्वर्गादपि गरीयसी ॥

माँ और मातृभूमि
स्वर्ग से भी महान है।
उनका कभी अनादर मत करना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अपेक्षा

दुःख का दूसरा नाम ।

अविक्खा अणाणंदे - पंचसूत्र

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

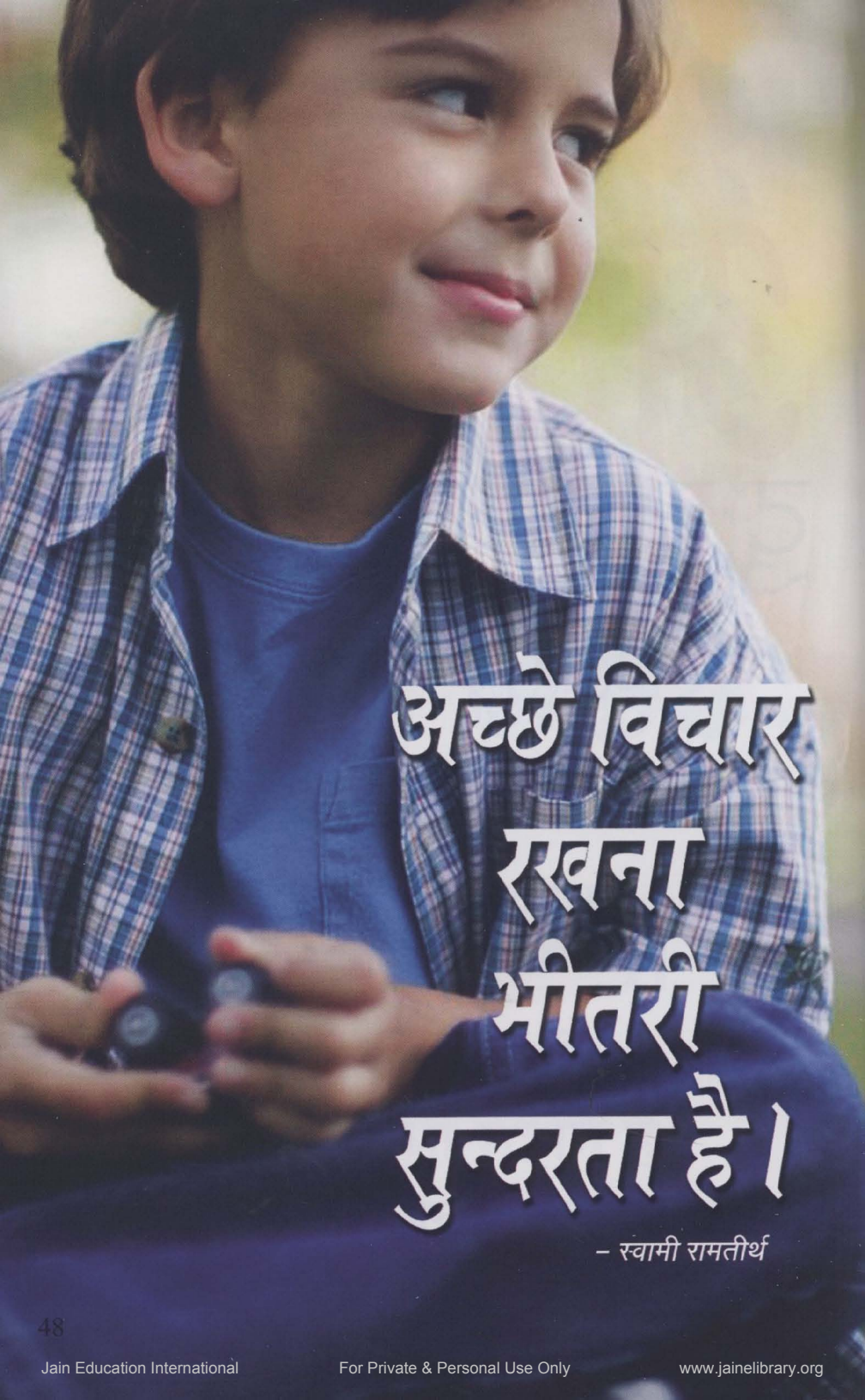

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कष्ट हृदय की कसौटी है।

– जयशंकर प्रसाद

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महान् चरित्र का निर्माण...
महान और उज्ज्वल विचारों से होता है।

– स्वामी शिवानन्द

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साहस से ही सफलता मिलती है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जिसे
पराजित
होने का डर है,

उसकी **हार**
निश्चित है।

– नेपोलियन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जिनेष्वभक्तिर्यमिनामवज्ञा, कर्मस्वनौचित्यमधर्मसङ्गः।
पित्राद्युपेक्षा परवञ्चनं च, सृजन्ति पुंसां विपदः समन्तात्।।

प्रभु के प्रति **अ**लगाव
साधु संतो की **अ**वज्ञा,
अनुचित कार्यो एवं
अधर्म का संग
मात पिता वगेरे की **उ**पेक्षा एवं
दूसरों की **ठ**गाई ... यह सभी
मनुष्य के चारों ओर भयंकर
विपत्तिओं को निर्माण करती है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अपराधियों और अपना अहित करने वालों का भी बुरा मत सोचो...

अपराधीशु वि चित्त थकी नवि चिंतवीअे प्रतिकूल।

– उपाध्याय यशोविजयजी (समकितना ६७ बोलनी सज्झाय)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक सुंदर दृष्टि मौन को वाचाल बना देती है।

एक कृपादृष्टि विरोध को सहमति बना देती है।

एक कुपितदृष्टि सौंदर्य को विकृत बना देती है।

- एडीसन

A beautiful eye makes silence eloquent.
A kind eye contradiction as assent.
An enraged eye makes beauty deformed.

For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

शरीर और आत्मा में अधिक से अधिक सौन्दर्य और सम्पूर्णता का विकास हो सकता है,
उसे सम्पन्न करना ही शिक्षा का उद्देश्य है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जिस काम को तुम कर सकते हो
या कल्पना करते हो कि तुम कर सकोगे,
उसको आरम्भ करो;
साहस में प्रतिभा, शक्ति और जादू है।
सिर्फ काम में जुट जाओ।
आरम्भ करो,
कार्य समाप्त होगा। – गेटे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रोध एक प्रकार की आँधी है, जब आती है तो विवेक को नष्ट कर देती है।

– एम. हेनरी

क्रोध के सिंहासनासीन होने पर बुद्धि वहाँ से खिसक जाती है।

WHEN PASSION IS ON THE THRONE REASON IS OUT OF DOORS.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रभु के पदन्यास पर चलना,
उसका • नाम
सन्यास

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अन्यथा शरणं नास्ति
त्वमेव शरणं मम
तस्मात् कारुण्यभावेन
रक्ष रक्ष जिनेश्वर।

– प्राचीन आचार्य

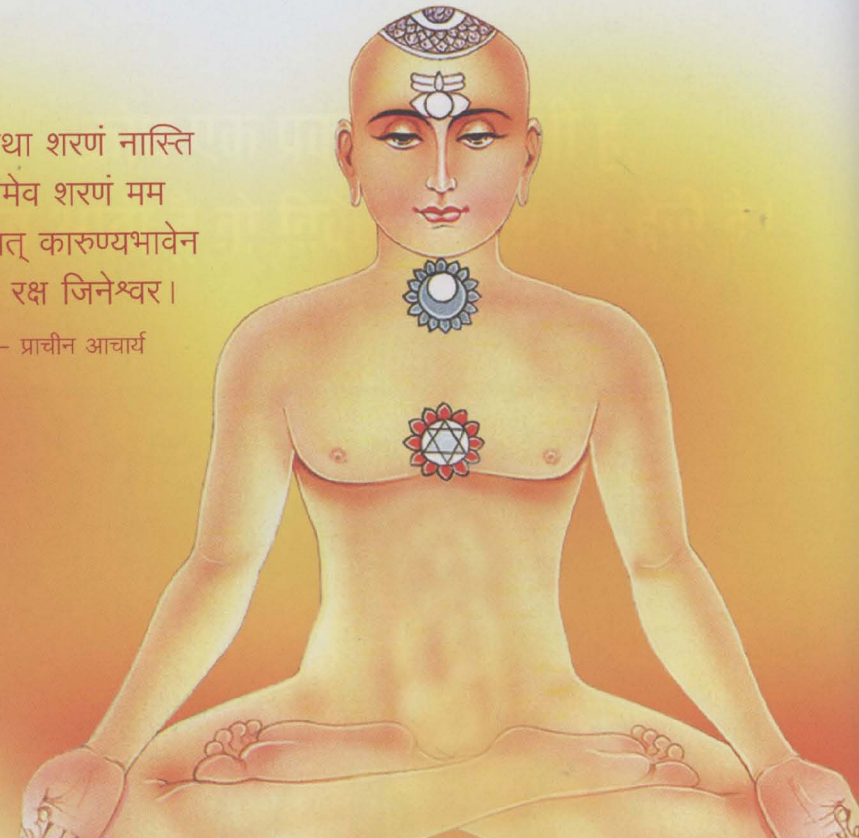

परमात्मन्

आप के बिना मेरा कोई शरण नही.
मात्र आप ही मेरे शरण हो...
इसलिये परमकरूणा से
है परमकृपालु जिनेश्वरदेव
आप रक्षा करो.. रक्षा करो..

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बच्चों पर आपकी शिक्षा से ज्यादा, आपके आचरण का असर होता है।

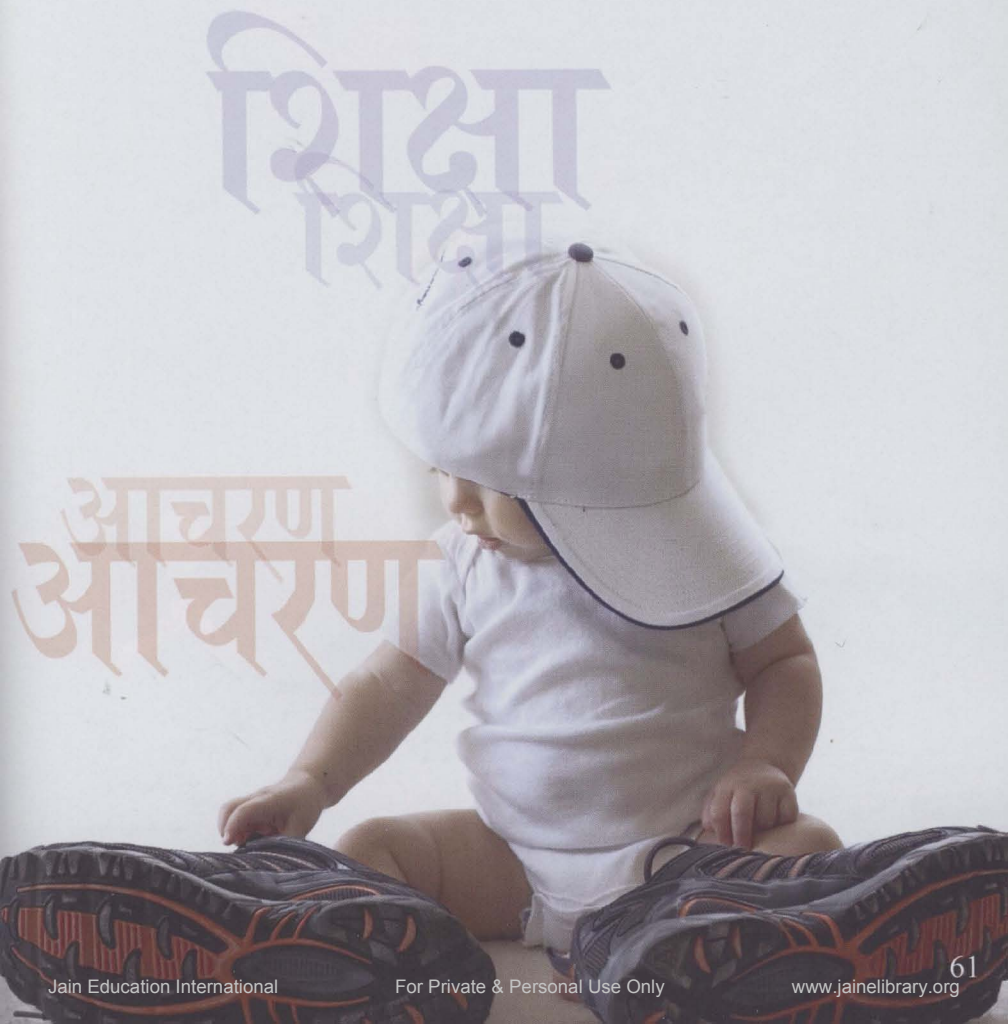

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

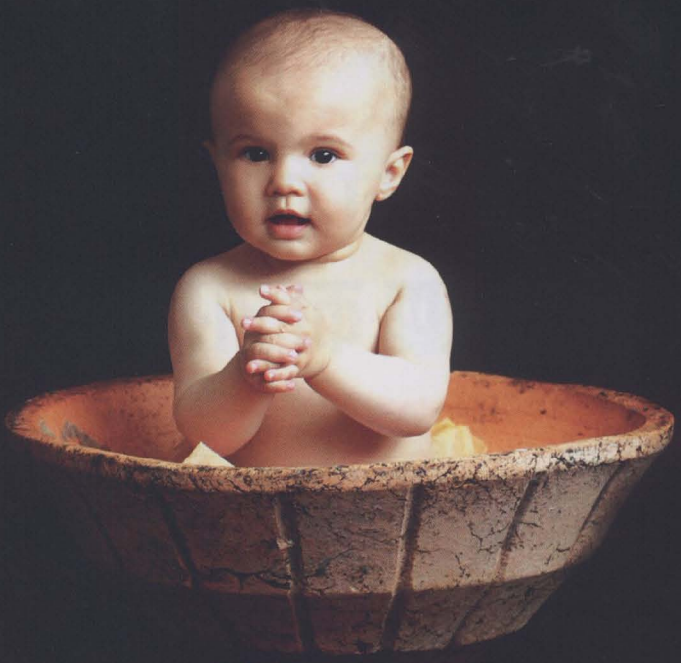

माँ और क्षमा

दोनों एक है...
क्योंकी
माफ करने मे
दोनों नेक है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जो व्यक्ति अपने साथियों के चुनाव में
विवेकी नहीं है, वह अपने
समय का सदुपयोग नहीं कर सकता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किसी भी पाप का अंत होता नही हमे उसका अंत करना पड़ता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कनक कामिनी को

त्यागे बिना आध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त नहीं हो सकती।

– रामकृष्ण परमहंस

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोहो पीइं पणासेइ माणो विणयनासणो
माया मित्ताणि नासेइ लोहो सव्वविणासणो

– दशवैकालिक अध्ययन ८

क्रोध प्रेम का नाश करता है,
मान विनय का नाश करता है,
माया मित्रता का नाश करता है,
लोभ सर्वनाश करता है...

– १४ पूर्वधर शय्यंभवसूरिजी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवसमेण हणे कोहं माणं मद्दवया जिणे
मायं चज्जवभावेण लोभं संतोसओ जिणे

– दशवैकालिक ८वा अध्ययन

क्षमा से क्रोध को
मृदुता से मान को
सरलता से माया को
संतोष से लोभ को
जीत

– अचार्य शय्यंभवसूरिजी म. सा.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संसार में
न कोई तुम्हारा
मित्र है और
न शत्रु।
तुम्हारे अपने विचार ही
शत्रु और मित्र बनाने के लिए
उत्तरदायी हैं।

– चाणक्य

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रुकना न तुम
जब तक
तुम्हारे श्वास का
लवलेश है।
हिम्मत न हारो
ऐ हृदय
यह साधना का देश है॥

– शिवमंगल सिंह 'सुमन'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रति यः शासनमिन्वति।

जो अनुशासन पालता है, वही शासन करता है।

– ऋग्वेद

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दया से लबालब भरा हुआ
दिल ही,
सबसे बड़ी दौलत है,

– तिरूवल्लुवर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैसे व्यवहार की
तुम दूसरों से अपेक्षा रखते हो,

वैसा ही व्यवहार
तुम दूसरों के प्रति करो।

– ल्यूक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जितनी बार हमारा **पतन** हो,
उतनी बार उठने में **गौरव** है।

– गांधीजी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

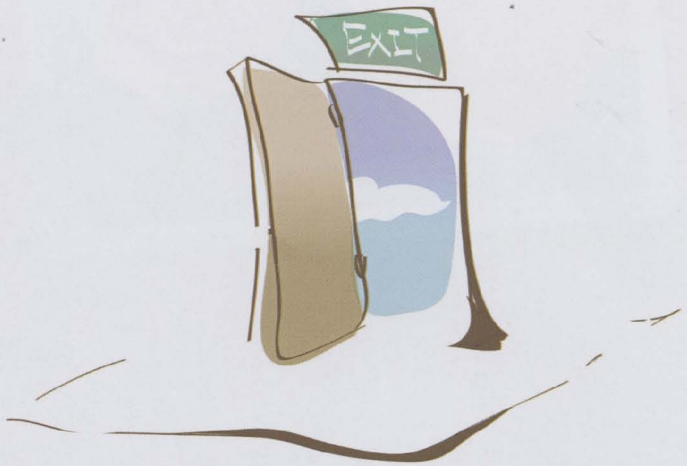

धैर्य जीवन के लक्ष्य का द्वार खोल देता है,
क्योंकि.. सिवा धैर्य के उस द्वार की और कुंजी नहीं है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अधार्मिक मित्रों का त्याग कर.

– पूर्व महर्षि

वज्जिज्जा अधम्ममित्तजोगं। – पंचसूत्र

प्रभु से डरो और जो प्रभु से नहीं डरता उससे भी डरो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

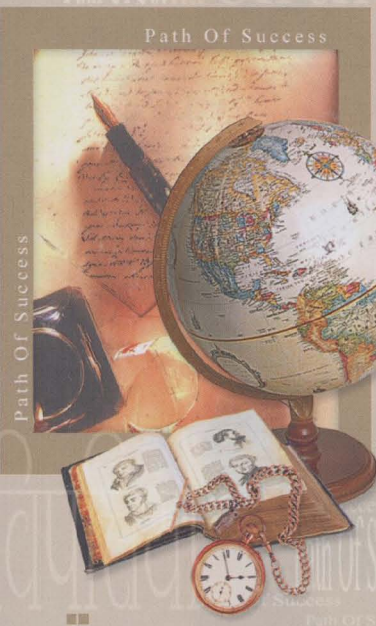

अशिक्षित रहने से
पैदा न होना अच्छा है...
क्योंकि,
अज्ञान विपत्तियों का मूल है।

– प्लेटो

अज्ञान विपत्तियों का मूल है। अज्ञान विपत्तियों का मूल है। अज्ञान विपत्तियों का मूल है।

BETTER BE UNBORN THAN UNTAUGHT, FOR IGNORANCE IS THE ROOT OF MISFORTUNE.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जिनपादयुगं युगादा-
वालम्बनं भवजले पततां जनानाम्।।
- भक्तामर स्तोत्र

हे प्रभो
आपके दोनो चरणकमल
संसार समुद्र में डुबते हुये
जीवों के लिये
आलंबन
समान
है।

- समर्थ मन्त्र वेत्ता
मानतुंग सूरिजी म. सा.

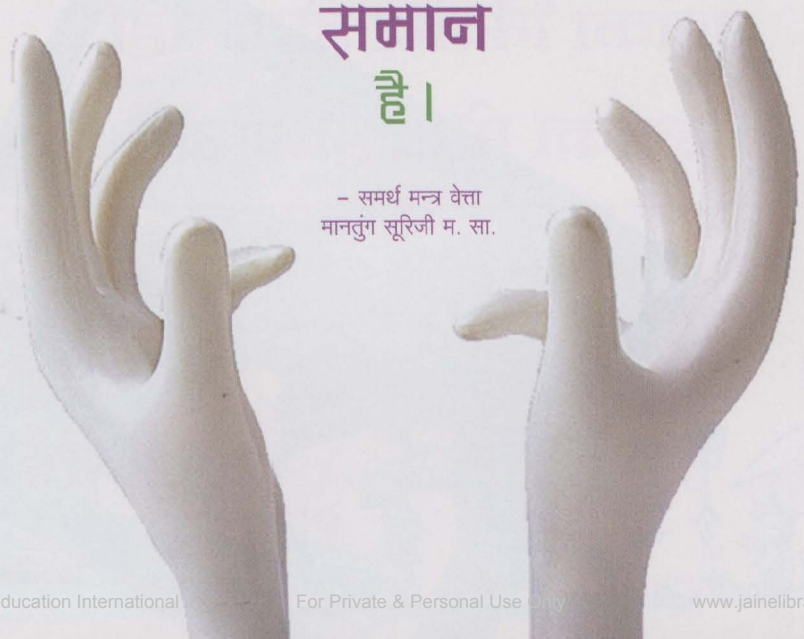

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुत्तोसओ अ सो होइ, निव्वाणं च न गच्छइ

– दशवैकालिक सूत्र : ५/२/३२

बहुत मिलने के बाद भी, जिसको संतोष नहीं, उसका निर्वाण होता नही... उसका मोक्ष होता नही..

– पूर्वाचार्य श्री श्रुतकेवली शय्यंभवसूरि म.सा.

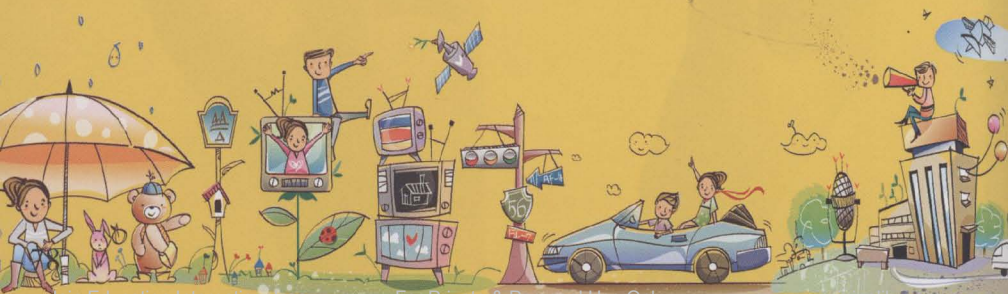

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निष्फलता
मात्र ये साबित करती है कि...

सफलता का प्रयत्न
पूरे मन से नहीं किया गया... – चर्चिल

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संकट में साहस का होना, आधी सफलता प्राप्त कर लेना है।

मानव के सभी गुणों में साहस पहला गुण है क्योंकि, यह सभी गुणों की जिम्मेदारी लेता है।

– चर्चिल

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भाग्य साहसी मनुष्य की सहायता करता है।

अप्पा कत्ता विकत्ता य सुहाण य दुहाण य।

- उत्तराध्ययनसूत्र

मनुष्य अपने भाग्य का स्वयं ही विधाता है।

– स्वामी रामतीर्थ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ईश्वर ने हर इन्सान को

किसी न किसी खूबियों से

सज्जित किया है।

न निर्गुणं किञ्चिदपीह लोके.....

WE ARE ALL GIFTED WITH

SOME STRENGTHS.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

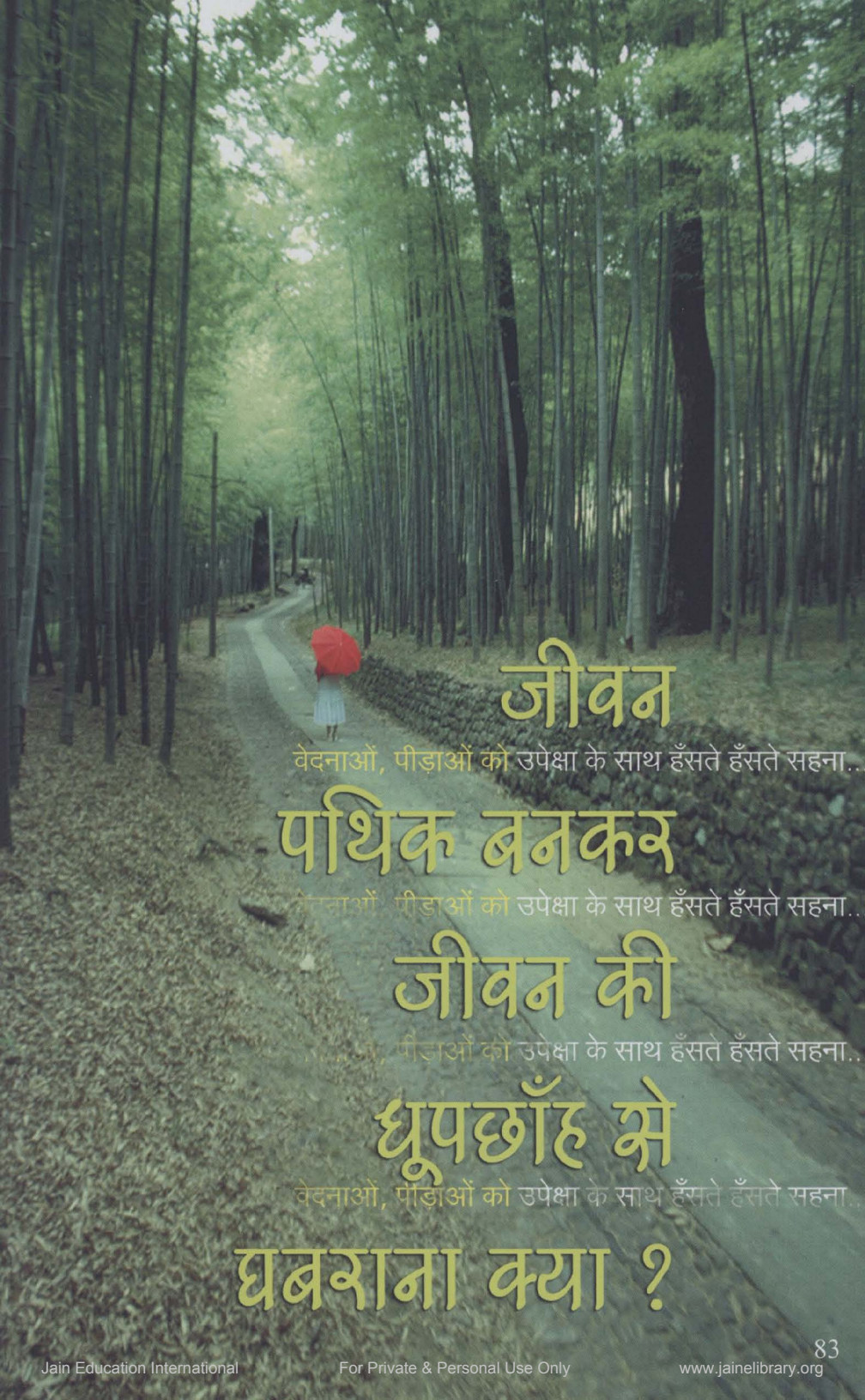

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चरित्रहीन शिक्षा,
मानवताहीन विज्ञान और
नैतिकताहीन व्यापार लाभकारी तो होते नहीं,
अपितु पूर्ण खतरनाक होते हैं।

– सत्य सांईबाबा

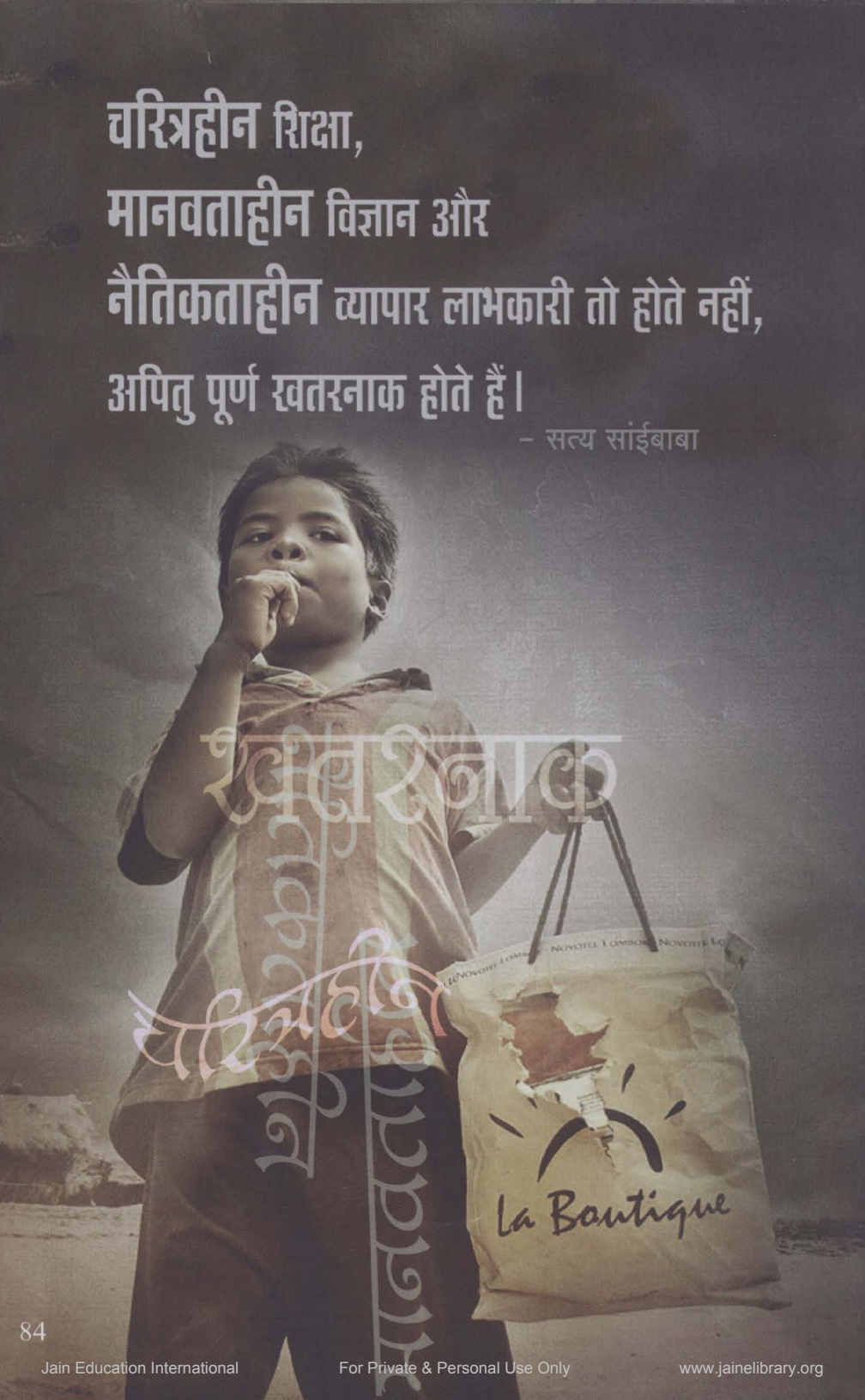

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

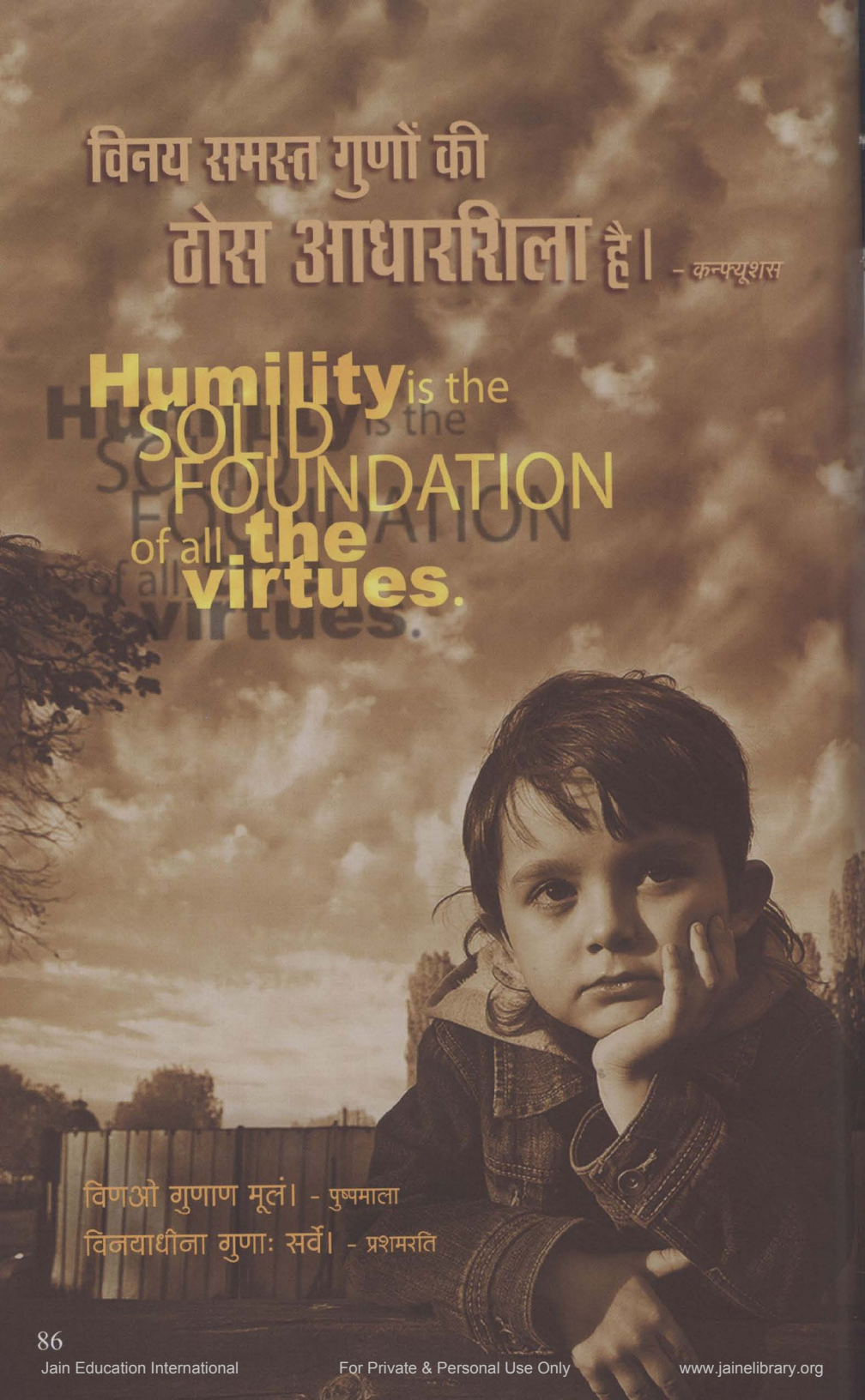

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

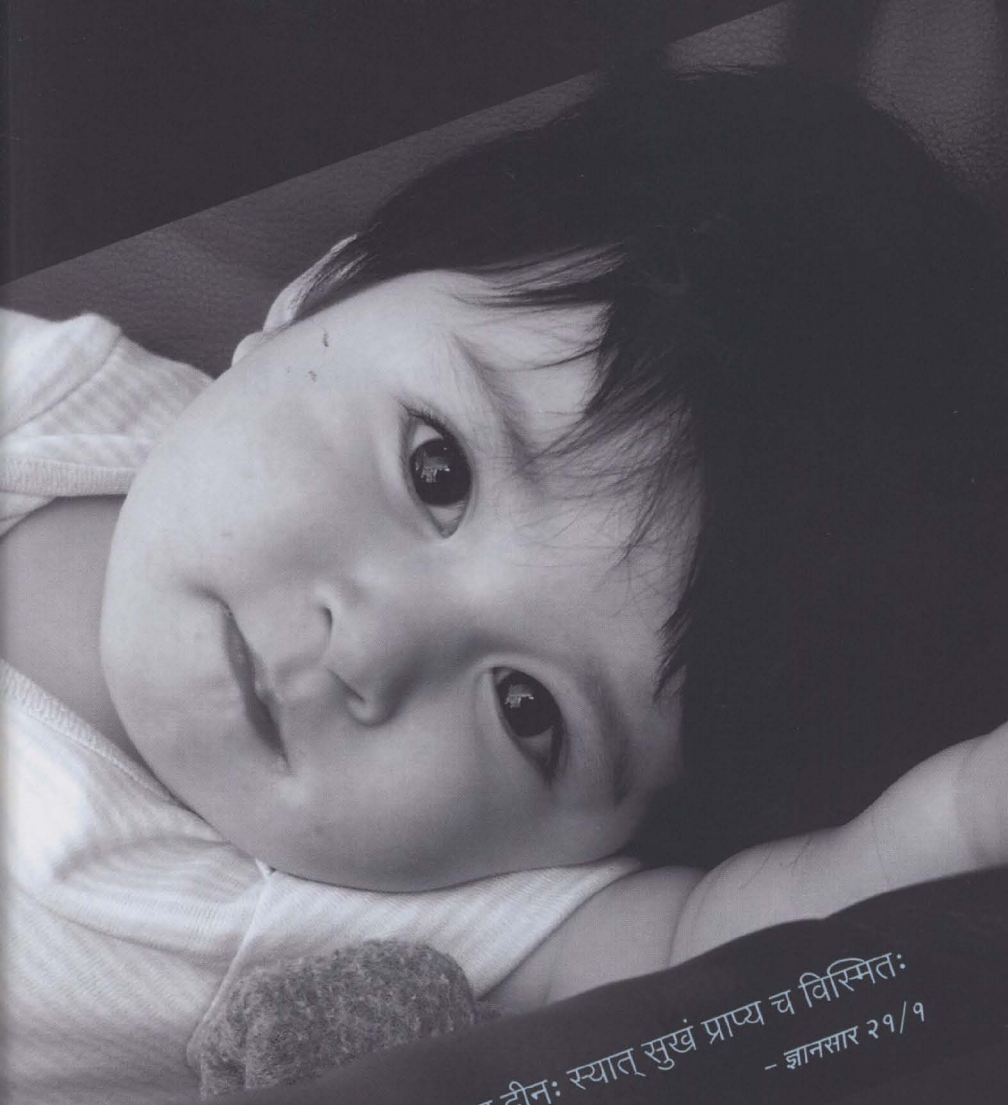

दुःखं प्राप्य न दीनः स्यात् सुखं प्राप्य च विस्मितः

- ज्ञानसार २१/१

दुःख पाकर दीन न हो, व सुख पाकर लीन न हो.

- उपाध्यायजी यशोविजयजी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंदर कितना भरा पडा है, कोइ न देखे...

धरती पर जो हीरे पडे है, वे शायद ५००० फीट
नीचे जाने पर भी न मिले यह मुमकिन है।

मगर

हमारे अंतर में जो हीरे पडे है,
उन्हें पाने के लिये केवल हमें अंतर में जाना है।

एक प्रयास तो करे...
हीरे होंगे आपके हाथ में!

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

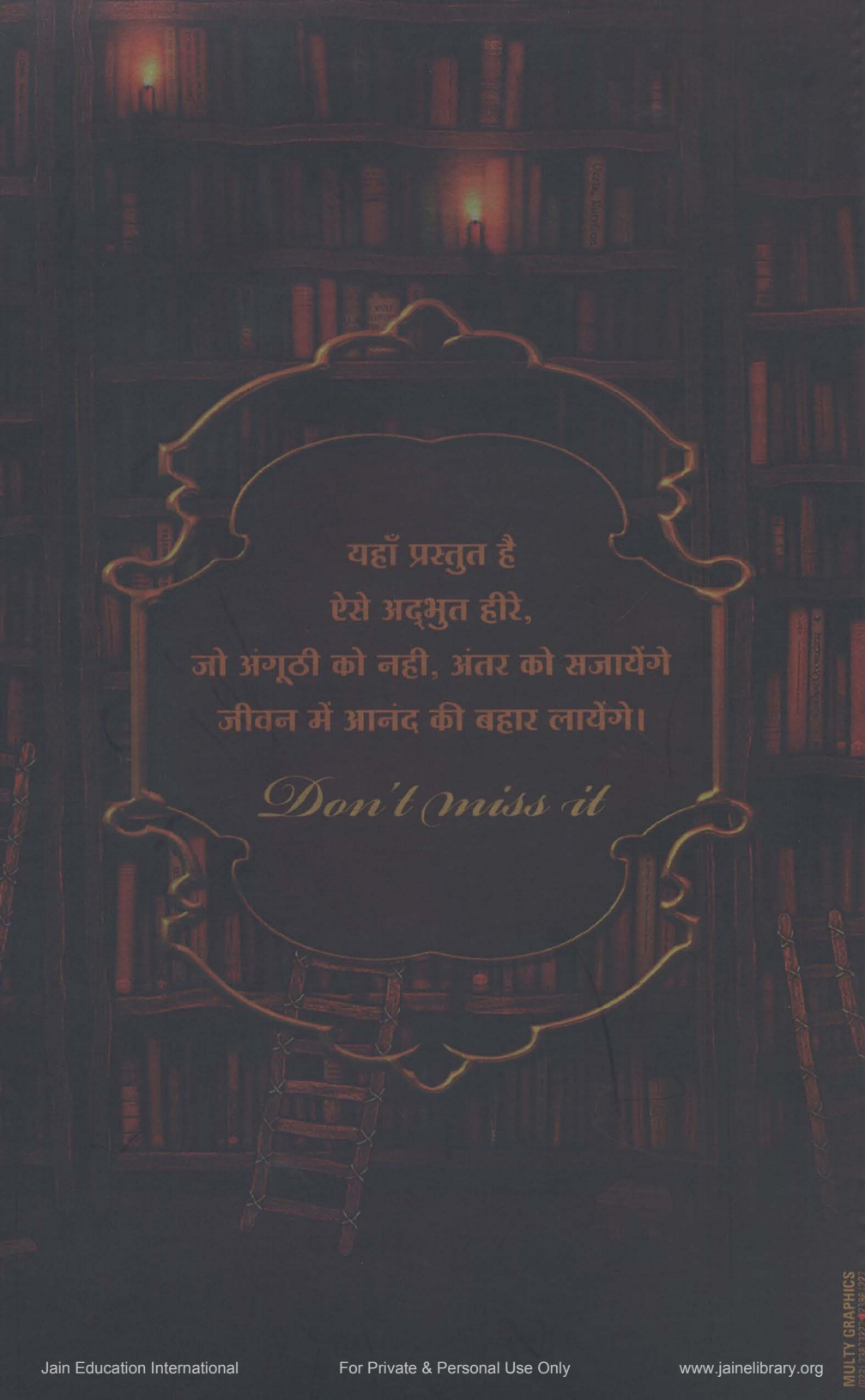

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org
MULTY GRAPHICS